

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180940

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82
S22A

Accession No. E. G. H808

Author सांक्रियायन, राहुल .

Title तीन नाटक . 1948 .

This book should be returned on or before the date last marked below.

तीन नाटक

[मेहरारुन के दुरदसा, नइकी दुनिया, जोंक]

राहुल बाबा



प्रकाशक

किताब महल • इलाहाबाद

२३५, हार्गिर्दी राड, पाट, बम्पद.

प्रथम संस्करण, १९४३
द्वितीय संस्करण, १९४८

मुद्रक—जे० के० शर्मा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद
प्रकाशक—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद

मेहरारुन के दुःखसा

नाटकके खेलाड़ी

१—लछ्मी	मुखिया लइकी
२—जसोदरा	लछ्मीके सखी
३—सीता	लछ्मीके सखी
४—रामकली	लछ्मीके मतारी
५—सूखा	गाँव भरके फूआ
६—ऊधो परसाद	लछ्मीके भाई
७—रामखेलावन लाल	बुरबक दुलहा
८—फरगुद्दी उपधिया	बुरबक दुलहा

मेहरारुन के दुरदसा

अंक १

[गीत गावल जाति आ]

एके माईबपवा से एक ही उदरवा में,
दूनो के जनमवाँ भइल, रे पुरुखवा ।
पूतके जनमवा में नाच आ सोहर होला,
बेटिके जनम परे सोग, रे पुरुखवा ॥१॥
धनवा धरतिया प बेटवा के हक होला,
बिटिया के किछुवो ना हक, रे पुरुखवा ।
मरदा के खइला-कमइला के रहता बा,
तिरिया के लागेला केवाड़ रे पुरुखवा ॥२॥
खेवे के रणपवा जिनिगिया भर परी ओके,
लइके जे मरदा मुअल, रे पुरुखवा ।
तिरिया के मुवले त बतिये कवन पूछा,
जिअते सवतिया ले आवे, रे पुरुखवा ॥३॥
अँखियेके देखत पतुरिया ले रखले बा,
मार-नारी देला दिन्द-रात, रे पुरुखवा ।
ओहि रे खसुरवा मरदवा के किछु नाहीं,
तिरिया के भकसी भोँकावे, रे पुरुखवा ॥४॥

[सीता, लछ्मि, जसोदरा तीनिगो जुवान लइकी बइठिके
बतियावत बाड़ीं]

सीता—जसोदरी ! आज त तोर गोड़े धरती पर नइखे पड़त ?

जसोदरा—भतीजा भइल ह नु सीता ! तू नइखू जानत ? भइया के तीनिगो बिटियै भइल रहलीं सन्, से आज घर में बेटा भइला से माई के खुसिहाली के त पुछबै मति करा ।

लछ्मि—आ तोहरा खुसिहाली के देखिके त बुझात-आ जसोदरा ! जनु तीनों तिरलोक के राज तोहरे के मिलि गइल ह ।

जसोदरा—भतीजा नु भइल ह लछ्मि बहिन !

लछ्मि—आ तीनों भतिजिया जब भइल रहलीं तब्बो एइसन खुसिहाली भइल रहे ? तब्बो तोहरा घर में सोहर गवाइल रहै ?

जसोदरा—तू कौनो आन मुलुक से आइल बाडू दीदी ! बेटी के जनमला पर नानु सोहर गवाला ।

लछ्मि—मेहरारू के जनमला पर सोहर ना गवाला, खुसिहाली ना मनावल जाला, बलुक उलटे घर भर पर सोग उदासी छा जाला, मालूम होला जनु घर के केहू मरि गइल बा । आ मरद के जनमला पर, ई सोहर, ई नाच, ई बाजा-गाजा ! जसोदरा ! तोहरा कब्बों मन में ना आवै, काहे बेटा-बेटी भै मरद-मेहरारू के ई दु आँख से देखल जाला ।

जसोदरा—इहँ सनातन से चलि आइल बा दीदी !

लछ्मि—सनातन से चलि आइल रहै सत्ती होखल । सौ बरिस भइल ह, बन्न भइला, नाहीं त बड़का जाति में—एक जनमियाँ में—सौ गो बेवा में दसे-बारहगो जीयै पावत रहलीं, बाकी कुलि आगि में भों-कारिके मुवा दीहल जात रहलीं । साल में एक-एक गाँव में दस-बीस गो मेहरारू जियते जरावल जायँ । देस भर में हर माले दस लाख से कम मेहरारू न जरावल जायँ ।

जसोदरा—दस लाख दीदी !

लछ्मिमी—आ पनरह सौ बरिसले सत्ती के नावें मेहरारू जरावल जात रहलीं, हिसाब लगावा कै करोड़ कै लाख हमनी के जाति के मेहरारू मुवाइल गइलीं ।

जसोदरा—दस लाख के हिसाबे डेढ़ अरब आ एको लाख मानल जाये त पनरह करोड़ सत्ती भइलीं दीदी ?

लछ्मिमी—सत्ती मति कहा जसोदरा बबुनी ! अदिमी के आगि में जरावै के कैसन निम्नन नावें धइले रहल ई मरद लोग ।

जसोदरा—लछ्मिमी दीदी ! लोग कहत-आ कि अपना खुसी से मेहरारू आग में जरि जास ।

लछ्मिमी—कब्बों भउर पर गोड़ परल बा जसोदरा बबुनी !

जसोदरा—एक बेर कराही में पूड़ी डारें में घिउ उछरि परल रहे दीदी ! एही दहिना हाथ में । आलू पीसिके बान्हल गइल, केतना-केतना दवाई कइल गइल । आजो ऊ दुख मन परेला त आँख में लोरि आबे ले दीदी !

लछ्मिमी—दुख दरद के समुभावे के होला, त कहल जाला “देही में आग लागल बा” “करेजा में आगि लागल बा” । आगि लगला से बेसी दूसर दरद नइखे । अजानै विख दे के मुश्रीला में अदिमी के किछु ना बुभाई, मुदा पुरुख जाति हमनी के मुवावै खातिर विखकै दिहल ना पसन कइले ।

सीता—ऊ चहले दीदी ! कि जौना तरे से बेसीसे बेसी तकलीफ होय, ओहि तरे से एकनी के मुवावै के चाही । विख से भै तरवार से दु-टुक काटि देहला में ऊ दुख ना नु होखे ।

जसोदरा—त सीता दीदी ! ई त सोरहो आना कसैपन रहल हा ।

लछ्मिमी—जसोदरा बबुनी ! हिनूतान के पुरुख जाति के गुन गावे

बखत ई मन में रखिहा, कि ई उहै लोगवा ह जे डेढ़ अरब मेहरारुन के सबले निघिन, सबले बाउर, सबले सासत के मौवत मरलस् । डेढ़ अरब मेहरारुन कै हतिया एही मरद लोग के गरदन पर बा ।

सीता—आ देखावे खातिर पोथी में लिखि देलन् कि बच्चा आ मेहरारू के ना मारै के । “छप्पन मूसा मारि के बिलाई भइलीं भगतिन” इहै कहाला ।

लछ्मी—तोहरा भतीजा से हमरा के कौनो दुसमनागत नइखे जसोदरा बबुनी ! बाकी जब बिटिया के बखत सोग मना के बेटा के बखत सोहर गावे के मेहरारू एखट्टा होलीं, त हमरा बूझि परैला, कि डेढ़ अरब मेहरारुन के आग में भोंकारि के मुआलाके बघावा हमनी गावतानी ।

जसोदरा—लछ्मी बहिन ! हमरा मन परत-आ कराही के घिउआ से आपन हाथ जरला के दुख, फेनु ऊ डेढ़ अरब मेहरारुन के छटपटा छटपटा मूअल ।

सीता—जेकरा चारो ओर मरद डंडा लेहले खड़ा रहें, कि ज आखिर बेर कतहूँ जिउ बचावे चहलस, त ओके भगहू के ठाँव ना मिले ।

लछ्मी—ऊ काहेके कहत बाडू सीता ! अबहिनो केतना जाति में लइकिन के जनमतै मुवा दीहल जाला, हाँ, आगि में भोंकारिके ना । मरदा कसैवा के हाथ में होइत त ऊ उहै करित, बाकी ई काम मेहरारू से लेल जात-आ, मरद कसाई मेहरारू के कसाई बनावत-आ । सोचा मतारी के करेजा । पसु-पंछी में ऐसन मतारी मिलल दुरलभ बा, जे अपना बच्चा के मुवावत देखी ।

जसोदरा—आ मेहरारू बेटा के अपने हाथे मुवावेले ?

लछ्मी—हाँ, बबुनी ! बाकी परबस परिके मरद के राज हवै, मरद कै हुकुम ना मनलासे ओकर गुजारा कैसे होई ? एही खातिर

मेहरारू आपन दयामया छाड़ि के जनमतै बेटी के मुआ देले । हाँ, मुवावै में तनी छोहि देखावै ले, आगि में ना जराके नून भै खैनी चटा देले, चाहे नार नाक-मुँह पर धै देले, जौनासे साँस बन्न होके बचिया मर जाये । एकरा साथे दु-चार बुन्न लोरो गिरा देत होई ।

जसोदरा—घरकै मेहरारू ऐसन होई, ई हमरा बिसवास ना रहल ह दीदी !

लछ्मी—मुदा ई मेहरारू कै मतारीपन छोड़ावल पुरुख कै काम ह, जसोदरा ! आज के दुनिया में मेहरारू हाथ-गोड़ बान्हि के मरद के समने पटक दीहल गइल बा । ओकर आपन किछु नइखे ।

सीता—धरम करम कै पोथी समुच्चा मरद के बनावल हा, जौना में मरद लोग हमनी के खेलाप हनि हनि के कलम चलौले बा । ई त सात समुन्नर पार से दूसर जाति के लोग, आइल, जे सती—ई जियतै मेहरारू के जारल—बन्द कइलस् । जनमतै बिटिया के मुअब हूँ के रोकै-थामै के बड़ कोसिस भइल बा, तौनो पर कतहूँ कतहूँ ऊ चलि रहलबा । पोथी-पतरा के धरम कै चलल होइत त आजिले सती ना बंद भइल होइत ।

जसोदरा—सबसे बेसी धरम-करम हमनिये करीले । हमनी एतना वरत-उपास ना केहू करे, ना साधु-बराभन के दान केहु देय ।

लछ्मी—दु अन्छर जे पढ़े के मिलल बा जसोदरा ! इहौ पोथी में बरजित हा । अबहूँ देखा लइकिन में कइगो पढ़ावल जालीं ।

सीता—लइकन के पढ़ावै में करजा-कुवाम करेके बाप लोग तयार रहेला, बाकी हमनी के पढ़ावे में कानियो कौड़ी खरच कइल जबूनै बुभाला । कहैला लोग कि का ई पढ़ि के मंसी-दरोगा होइहै ।

जसोदरा—सीता दीदी ! जे हमनी के बेटा लेखा पढ़े कै सुबि-हिता होइत, आ मंसी-दरोगा होये कै मोका मिलित, त हमनी केहू से पाछे ना रहतीं दीदी !

लछ्मिमी—ई साँच हा बबुनी ! बाकी जबले बेटवन के भइला में सोहर गाके हमनी अपनै सोर काटब, तब ले कौनो मोका ना मिली । ई त किछु बाबू भइया लोग जे बिटियन के पढ़ावत-आ, ओहू में दूसरै मत-लब बा ।

जसोदरा—कवन मतलब बा दिदिया ?

लछ्मिमी—पढ़ल-गुनल लइका मुख लइकी से बियाह नइखै करै चाहत, एही से तिलक-दहेज लखा पढ़ौहू कै चाल भइल हा ।

सीता—आ देखलू नु जसोदरा ! हमरा टोला-महल्ला में देवकलिये नु सोहर, गारी गावे में सबसे फरकोर बाड़ीं ?

जसोदरा—हाँ, दीदी ! ऊ सोहर में त अदबदाय के चहुँपल रहेलीं ।

लछ्मिमी—मेहरारुन कै महिमा हेठ कइला खातिर ई मरदन के जीत के गीत गावल हा, अउरि किछुओ ना ।

जसोदरा—त हमनी के सोहर ना गावै के लछ्मिमी दीदी !

लछ्मिमी—ई सोभै दु आँखि से देखल बा नू ?

जसोदरा—बा नु, नाहीं त बिटियौ के जनमला में सोहर गावे के चाहीं ।

लछ्मिमी—मेहरारू सोहर गाव के छोडि दी, त इनरासन गरम होखे लागी । हमनी के भागि अपना हाथ में नइखे, हमनी के नाक छदा-इल बा, जौनी में मरद सोना के नाथ पहिरोल बाड़ें ।

सीता—रसरी के होइत, त हमनी तुरियो फँकती, मुदा मुखपन, हमनी सोना के लोभे ऊ नथेल नाकि में पहिरले फिरतानी ।

जसोदरा—त हई सोहर गावै के का कहतबाडू लछ्मिमी दीदी !

लछ्मिमी—हमनी के सोहर एक्को इयाद ना करैके, न रही बाँस न बजी बाँसुरी ।

जसोदरा—ई निम्नन कहत बाडू, दीदी !

लछिमी—मरद हमनी के एक-एक तरे से जकड़बंद कइले बाड़न् ? खेलौना में देखा, हमनी के छिपिया-मउनिया, जाँता-चूल्हा, गुडुवा-गुड़िया कौ खेलौना मिलेला औ लइकन के तीर-धनुही, घोड़ा-हाथी, गुल्ली-डंडा । एहू के भीतर भेद बा जसोदरा बबुनी !

जसोदरा—कवन भेद बा लछिमी दीदी !

लछिमी—इहै जे पुरुख लइकैयें से अपना भुजा पर भरोसा करें, हियाव आ विरताई सीखें; आ हमनी मेहरारुन के मन में बइठि जाये, कि हमनी के करम में खाली जाँता-चूल्हा बा ।

जसोदरा—बाकी ई बतिया ज मेहरारुन के कहल जाय, त उही मरही धउरिहैं ।

लछिमी—ई नइकी बात नइखै । राजा बाबू लोग गरिबवन के पीटै खातिर गरिबने के पोसि के राखैला । एही तरे मरद लोग मेहरारुन के दबावे खातिर मेहरारुने के गोइन्दा रखले बा ।

जसोदरा—लछिमी बहिन ! हमनिओकै कबहूँ दिन लौटी ?

लछिमी—दिन लौटल ठीक कहत बाडू जसोदरा बबुनी ! एक दिन रहे, जब मतारी-मेहरारु के राज रहे, ई बात हेई घरम-करम के पोथी में नइखे, ई पोथी त हमनी की आँखि में धूर नु भौकैके बनल बा ।

जसोदरा—हाँ, त पहिले मेहरारुन के राज रहल ?

लछिमी—राजा-रानी लेखाँ राज मत सम्भिहा । ऊ राज पंचैती ऐसन रहै ।

जसोदरा—से राज उलटि कैसे गइल ?

लछिमी—मेहरारु के रोजी मरद चलावे लागल, ओही से ।

जसोदरा—त जब ले मेहरारु मरद के कमाई खात रही, तबले ऊ मरद के चेरि बनि के रही ?

लछिमी—हाँ, एमें तनिको भूठ ना हवे ।

सीता—देखीं नु हमार माई बाबूजी से कम नानु खटैले । बाबूजी दस बजे से चारि बजे ले छ घंटा इसकूल में पढ़ावे जालें, आ माई दु घड़ी रात रहैले तबै से उठि के आधी रात ले रसोई, चौका-बासन, कूटल-पीसल केतना काम करत रहैले, बाकी बाबूजी के छ घंटा पढ़ावल काम समुभल जाला, माईके अठारह घंटा खटल, कौनो गिनती में ना हवे ।

लछ्मी—आज दुनिया भर में खाली रूस के मेहरारू मरद के चेरी नइखीं । से कैसे ? एही से कि ऊ मरद के दीहल लूगा-कपड़ा ना लेलीं ।

[परदा गिरि गइल ।]

अंक २

[गीत गावल जाति-आ]

हम चेरी करीं दिन भर टहलवा ॥
 हमरे से जेकर जनमिया करमिया,
 सेई हो भइल हमरा से फुटलवा ।
 गुंगवा के चुभि चुभि बोलिया सिखौलीं,
 से रखले हमरा के बलेलवा ॥
 बारे से परदा घुंघटवा कढ़ौलै,
 घरवै भइल हमनी के जेहलवा ।
 दुधवा के पी पहलवनवा बनल जे,
 सेही कहे हमरा के अबलवा ॥
 जिभिआो चलावै आी हथवो चलावै,
 से देखि के हँसै लागै महलवा ।
 राजौ धरमवौ में मरद के चलती,
 हामर नहीं केहु मानै कहलवा ॥

ढोल औ पसू समतुलवा जे भइनीं,
इहँवा खसूर हमनी के दबल वा ।
ढहलें पुरनका नौका उठत बा,
ई आहल हमनी के समलवा ॥

[टेसन से रेल चलि गइल, गोड के भाँभर भन-भन करत दु-गो तुलहिन समुच्चा अंग ढँकले ठाड़ बाड़ीं, दु-गो मरद आ के एक नजर देखि के एगो मेहरारु के एक; दुसरकी के दूसर चादर के खूंट धे के ले चलल । ओकनी के निकरि गइला पर एगो मरद आवत-आ । उहाँ केहू मेहरारु के ना देखि के छाती पीटत-आ]

मरद—हाइ, हम लुटा गइनी, हाइ ! केहू देखला ह भइया ! ललकी चादर ओढ़ले हमार मेहरारु हेही ठाढ़ रहल हा । ए दादा ! हम समान उतरवावै लगनी हा, एही में ना जानी कहाँ अलोप हो गइल ।

लछिमी—अलोप ना हो गइल मुख जपाट राम ! हेँही दुगो मेहरारु लाल चादर लाल लुग्गा ओढ़ले-पहिरले ठाढ़ रहलीं, आ दु गो मरद चुपचाप एक-एक के चादर धेके, बकरी के कान पकड़ला लेखाँ, ले गइलें हा ।

मरद—ए माई-बहिनी ! ओमें एगो मेहरारु हमरो रहलि हा । कौना ओर ले गइल हा ? तनी केहू बतावा ए दादा ! हमार सात पुहुत के इजत चलि जाई ।

[छाती पीटत-आ]

लछिमी—त सात पुहुत के ईजत बोरा में कस के नु ले आवेके चाहत रहल हा ?

मरद—एको अँगुरी के पोरो न लौकत रहल हा, ए दादा ! केहू देखले होखै, त बतावा । कौना ओर हतियरवा ले गइल ह ?

लछिमी—एगो पुरुब आ एगो पच्छिम गइल ।

मरद—अपने बड़ सग्यान बुझातानी, अपनेहीं बताई, हम कौना ओर जाई ?

लछ्मी—जइबा, आ जे असल मेहररआवाला मरदवा भेंटाइल आ ओकरा के तनिको टोकला, त हाड़गोड़ एक्को ना छोड़ी ।

मरद—(छाती पीटि के) हे भगवान्, कहाँ गइल मोर इजतिया ! कवन मुंह लेके जायेब घरे, गवना लेआवत रहनी हँ । हे दादा केहू मदत करिहा, गरीब कायथ लुटा गइल ।

लछ्मी—कयथन किहाँ त किछु कम परदा होला ?

मरद—हमार घर पंचुआ हा, हम सहर में ना रहीले ।

लछ्मी—त केहू के साथे न लेआवै के चाहत रहल हा ?

मरद—ए दादा ! हम आठि आना में वियाह कइनी । हम अगुआ के कहि देहनीं कि वियाह करै के होइ त करा, बाकी, रामखेलावन लाल आठ आना से बेसी ना खरच करिहें ।

लछ्मी—त जाये दा, आठे आना नु लोकसान भइल ।

मरद—ए दादा ! हमार लाख रुपया के ईजत बिगारि गइल ।

लछ्मी—लाख रुपया आँखों से देखले बाड़ा, जे लाख रुपया के ईजत बिगरी । [एही बीच में सीता जलदी-जलदी में आ के बोललीं]

सीता—लछ्मी दीदी ! एगो दुलहिन गरियार बैल लेखां ठाढ़ भइल बा, मरदवा चादर धैके चलै के कहतआ, बाकी ऊ हिलत नइखे ।

लछ्मी—उठा रमखेलावन लाल ! तोहार त भाग खुलल, अब ऊ आपन भाग ठोके । उठा अबेर मति करा ।

[सीता अ लछ्मी के पाछे-पाछे लोर पोंछत रामखेलावन लाल चललें, मंच के झाड़े गइला पर, एगो मरद आ एगो दुलहिन उहाँ आके ठाढ़ हो गइलें । मरद चादर तानत-आ, मेहरारु धप् से बइठि जाति-आ ।

एही बखत सीता आ लछ्मि के पाछे रामखेलावन लाल चहुँपि जात बाडन ।]

रामखेलावन लाल—[देखते] ए दादा ! ई हमरे मेहरारु हा ।

लछ्मि—मुँह देखबे ना कइला, तोहार मेहरारु कैसे ?

रामखेलावन—ई हमरे चदरिया ह ?

लछ्मि—घत्, भुट्टा कहीं के ! आठ आना में चादर मिली ?

रामखेलावन—कनियवाँ के बाप देहले रहल हा ।

लछ्मि—(दुसरा मरद से) ई तोहार मेहरारु हयीं ?

मरद—हाँ, बबुई जी !

लछ्मि—कैसे चीन्हत बाड़ा ?

मरद—काहे, ई ललकी चादर हमार कीनल-बेसहल हा ।

लछ्मि—हई रामखेलावन लालो कहत बाड़ें, कि ई चादर हमरा ससुर के दीहल ह ।

मरद—हमार नाँव फरगुद्दी उपधिया हा, माघोपुर घर हा । कायथ-कथुल्ली जे मुँह से फेनु ई बाति दोहरौले त हाड़-गोड़ एक्को न छोड़ब, बदामास कहीं के ।

रामखेलावन—(आसते से) छोड़ दीं ए बबुई जी ! हमरा करम में ना रहल हा, बाम्हन रार करे के तयार बा ।

फरगुद्दी—रार के नाँव लेबा, देखाई तोहरा के (घोती खूँटि के पैतरा बान्हत डंडा भांजि के), ठाढ़ न रहा मामा !

रामखेलावन—जाये दीं, हमरा बाप के अपना बाप के सार बनौले, किछु औरिउ मुँह से निकारी । हम जातानी, ए बबुई जी !

लछ्मि—तनी भर ठहरा । (फरगुद्दी से) उपधिया जी ! अपने बराभन नु हवीं ।

फरगुद्दी—(सानत हो के) हाँ बबुई जी ! हम उपधिया हवीं, निम्मन बराभन ।

लछ्मिमी—आ कनिया के कहाँ से विदा करा के ले आवतानी ?

फरगुद्दी—सीतलपुर से, हमरा ससुरारै के घर में टेसनियो बाटे ।

लछ्मिमी—घर में टेसन ?

फरगुद्दी—जीभि लटपटा गइल ह, बबुई जी ! वही गाँवें में टेसन बा ।

लछ्मिमी—बाकी उपधिया जी ! जे अपने के घरे कायथ के बेटी दुलहिन बनि के जाय, त लोग राखी ?

फरगुद्दी—राम-राम बबुई जी ! हमरा उपधिया बराभन के घरे कायथ के बेटी दुलहिन बनि के जाई, त चउकठ के भीतर माई ढुके दी ?

लछ्मिमी—रामखेलावन लाल ! बुरबक अदिमी के मेहरारु गुम हो गइल बा । का जानी भलेखा में तोहरें न दुलहिन बनि गइल होय, एसे हम हिनकरा से पूछि लीं त, कौनो हरज बा ?

फरगुद्दी—(आपन बोली मुनतै दुलहिन के गोड गडा के खड़ा होखैके बात मन पडतै फरगुद्दी के काठ मारि गइल, बड़ जोर लगा के कहलें) हाँ, देख लीं बबुई जी !

लछ्मिमी—(बइठि के घुंघुट में अपना मुँह डालिके किछु बतियौलीं, फेनु बोलली) ई कोपा-समहुता टेसन से चढ़लीं हाँ, समहुता के राम-पदारथ लाल कै बेटी हवीं । अपना मरद कै नांव नइखी बतावति, अपने दूनो अदिमी बूझि लीं, कि ई केकर दुलहिन हवीं ।

फरगुद्दी—[डंडा हाथ से गिरि गइल, देह कांपै लागल, रोआइन मुँह क'के बोललन्]—कवन डंका देहले रे दैया ! तीन बिगहा कसकारी बेंचि के हजार में किनले रहनी हाँ । हाइ बप्पा ! कहाँ दूँडी ।

लछ्मिमी—उपधिया जी ! एजनी बप्पा-दैया कहले से काम ना चली हमरे समने एगो अउरो अदिमी आइल, उहै दुसरकी दुलहिन के ले

गइल । रामखेलावन लाल ! समहुता के रामपदारथलाल तोहरे नु ससुर हवें ?

रामखेलावन—हाँ, ए दादा ! हाँ बबुईजी ! अपने देवता बानीं ।

लछ्मिमी—उपधिया जी ! इहाँ अगोरला से ना काम चली । बिसवास ना भइल होय, त अउरिउ देखी । रामखेलावन लाल हेने हमरा दहिने ठाढ़ होइहा त [रामखेलावन आके सिटुकिके ठाढ़ हो गइलें] उपधिया जी ! अपने ओहीं ठाढ़ रहीं । रमपदारथ के बेटी ! लाज-सरम करै के होय, त फरगुद्दी के साथे जा, आ माधोपुर में भाडू-लबदा खइहा, नाही त हमरा दहिने रमखेलावन लाल खड़ा बाड़ें, एनकरा पंजरामें आ के खड़ा होजा । [दुलहिन लाल चादर में लपिटाइल रमखेलावन लाल के पंजरा ठाढ़ हो गइल ।]

फरगुद्दी—हे दैया ! एहि राति के एकमा में कहाँ खोजी ?

लछ्मिमी—रमखेलावन के उप्पर डंडा ताने के रहला, खोजा भे उफ्फर परा ।

[कपार पर हाथ धहले फरगुद्दी चलि गइलन्]

लछ्मिमी—आ रामपदारथ के बेटी ! आपन नाँव बतावा त ? [चुप देखि के], बोलाई फरगुदिया के ? बोलाव रे सितिया बबुनी ! ओही के समुभा दीहल जाउ, कि केतनो ई अपना के कायथ के बेटी कहस, कहि दी, कि फरगुद्दी के पाकल बार देखिके पखंड कइले बिया ।

रामखेलावन—[भट से धरती में बइठिके लछ्मिमी के गोड़ पर मूँढ़ ध के]—हे भगौती ! अपने कालीमाई होइके हमार सहाय भइलीं हा ।

सीता—जवान सम्हार के बोला रमखेलावन ! हमार दिदिया काली नइखी, इ गोर आग ऐसन चमकति-आ ।

रामखेलावन—खसूर माफ करा हे धरमावतार ! अपने हाथे

दीहल ईजत अपनेहि हाथे मति बिलुवावा । रामखेलावन के एही एकमे में इनार-कूआँ देखेके परी ।

लछ्मिमी—इनार-कूआँ ना, धुरदह के पुल मिली उहै रहता में, पर-सासे एने; पुल तरे पानियो पूरा बा । बोलाव सितिया ! फरगुद्दी पधियवा के, ले जाउ गुगिया के मधवैपुर ।

रामखेलावन—[सीता के चलत देखि, गोड़ पर कपार पटक-पटक के हाँफत हाँफत] तनी भर ठाढ़ होख, हम बोलवा देतानी [रोवत] तनिके भर । [सीता ठाढ़ भइलीं]

लछ्मिमी—हेई गुगिया अबहिनों चुप बा ।

रामखेलावन—हम बोला देतानी, ए दादा ! नउवाँ बोल दा हो, नाहीं त फरगुदिया कसाई ह कसाई । (चादर के भीतर सुगबुगाइल लेकिन चुप देखि के), नउवाँ बोलि दा, बोलि दा हो दादा ! हाइ ! हम काहे रमपदरथा के फेर में परनीं, हमरौ ईजत लेहलस् ।

लछ्मिमी—सीता ! ई ना बोलिहै, फरगुदिया टेसन के बहरा ना भइल होई, अपना कुल्ली से बोलु, कि “फरगुद्दी के दुलहिन मिलि गइल” कहिके गोहरावा ।

[दुलहिन धप से भूँड में बइठि के चादर के भितरै से लछ्मिमी कँ गोड़ छानि लेहलीं ।]

लछ्मिमी—उहुँक, एसे काम ना चली ए रामपदारथ के बेटे ! आपन नांव बतावा । (चादर में से किछुओ सांय-सांय के अवाज) साँय साँय से तोहार नाँउ ना मालुम होई, जोर से बोला, जौना से हमरा कान ले ऊ चहुँपउ (फेनु तनी जोर से साँय-साँय) जा सीता । ई भुँका के हमार कपार खा जइहें ।

रामखेलावन—(हाथ जोरि के) हम बतावतानीं, एकर नाँउ सुभगिया ह ।

लछ्मि—(ओठें पर हँसी रोकने के) उहूँक, तोहरा कहला के कवन ठेकाना ?

रामखेलावन—(निरास होके) रामपदारथ के बेटी ! लाज छाड़ि के नांव बतावा, नाहीं त रामखेलावन हइहै धुरदह के रहता धरत बाड़ें, फेनु जिनगी भर रणापा खेइहा । हा भगवान् ! हम का जानत रहनीं, कि आठ आना में जिउ लेवै के बियाह होत्-आ । (अबकी अवाज साफ बाकी काँपत निकसल) “सुभगिया ।”

लछ्मि—अच्छा ई त भइल सुभागो ! ठाढ़ होइ जा । हई एतना जे सासति-दुरगति भइल हा, ई एही घुघुटवे खातिर नु, तनि आँखिया लौकै भरके एके खोलै दा (कहि के लछ्मि घुघुट खिसकाय के नाक आँखि खोलि देहलीं !)

[परदा गिरत-आ]

अंक ३

[लछ्मि के मतारी रामकली रमनामा ओढ़ले मौनी में सालिग-राम के राखि के तुलसी-चन्नन धूप-देहलीं, फेनु, घंटी बजावत आरती उतरलीं । लछ्मि आ ओनकर सखी सीता आ के दूनो हाथ से आरती ले के कपारे चढ़ौलीं । रामकली माला जपे के तयारी करै लगलीं । एही बखत लछ्मि बोललीं]

लछ्मि—हमहूँ ए गो अहतुति सिखनीहूँ माई ! सूरसागर से । तें माला जपु, हम अहतुति गावत बानी । (लछ्मि गावति आ) ।

साँचे तू बोला हमरा देवतवा !

जुग-जुग से टेरनीं तनिको न सुनला,

रहि गइला खाली अपने लेवतवा ।

अरबन तिरियवा सीसओ चढ़ौलीं,
 तबहँ न कइला तनिको मदतवा ॥
 चलतै चलत कहँ टावों न पावल,
 भूठै त नइखे तोहरा रहतवा ।
 एक-एक के बतिया उलटै सुनावत,
 अन्हरन के पाछे अन्हरा चलत बा ॥
 आपन जे बुधि-बल तनिको सम्हरले,
 टारीं ते करमों कँ रेखवा टरत बा ।
 बीतल कुदिनवा आइल सुदिनवा,
 हौवा न अब चौवैया बहत बा ॥
 जहँवा पलकवा न अँखिया प लागल,
 देखा पुरान ऊ घरवा ढहत बा ।
 सूरसाम कहँ पाथर देवतवा,
 बकसँ बिलार रही बाँड़े जगतवा ॥

रामकली—(माला फरका राखिके, आँखि निकारिके)—ई सूर-सागर के अहतुति हा लछिमी ?

लछिमी—हाँ, माई ! सूरसागरे से नु इयाद कइनीं हौं ।

रामकली—आ सूरसागर में भगवान् के गारी दीहल जाई ?

लछिमी—भगवान् के गारी-मार का का ना दीहल जाला, माई !

रामकली—महतारी के चरावा मति लछिमी !

लछिमी—चरावतानी माई ! तोरा से के बेर कहनीं कि ककहरा पढ़िले, दु दिन में आ जाई, फेनु अपनेहि सूरसागर, बिने-पतिरिका पढ़ै लगबिस् ।

रामकली—हमार चलल होइत, त तोहरा के एक्को अच्छर पढ़ै

के ना मिलल होइत । का कहीं ऊधो के बाबू के । साँचै बेटिन के अच्छर ना सिखावै के ।

लछिमी—तें त नानु मनवे माई ! सालिगराम के पुजला में मेहरारू के छप्पन कलप भर कुम्भीपाक—पीबवाले नरक—में रहेके परैला ।

रामकली—भूठ, पोथी में नइखै । तहरा वाति बनावै बहुत आ गइल बा ।

लछिमी—ले आ के पोथी देखाई ?

रामकली—जानत नु वाडू कि हमरा अच्छर ना आवेला, एही से ।

लछिमी—त तें समुभक्त बाडिस् कि हम भूठे पढ़ि देइव ।

रामकली—ज पोथी में लिखल होइत, त गुरु बाबा काहे हमरा के सालिकराम के कासीजिउसे ले आ के देतें ?

लछिमी—साँचै कहीं माई ! ते पाँच गो रुपया चढ़ा के गोड़ जे जागैलिस् ?

रामकली—गुरु-गोसैयाँ के अपना मुँह से ऐसन वचन निकालेलिस् । हे भगवान् ! ई बेटा हा कि सन्ताप ?

लछिमी—त माई ! तें चाहत वाडिस्, कि हम पोथी में छछात देखत रही, कि ई काम कइला से तोरा के छप्पन कलप नरक में रहै के परी, आ तौनों पर चुप रही ।

(सीता आ के)

सीता—ना लछिमी दीदी ! चाची जौन बात नपसंद करें, ओके नानु कहै के ।

रामकली—इहौ बा नु एगो बेटा ! देखा नु कैसन मुँह से फूल भरत-आ ।

लछिमी—[नराज ऐसन मुँह बना के] त सीता ! हम भूठ कह-तानी ?

सीता—लछ्मिमी दीदी ! हमरा पर नराज मति होखा, हम तोहरा के भुट्ठी नइखी बनावत । बाकी जौन बात चाची के मन के नइखे, तौना के ना नु कहेके ।

रामकली—मतारी-बाप के अदब-लिहाज नु करैके परैला बेटी सीता ! सिखावा एहि लछिमिया के ।

सीता—हम सिखावतानी चाची !

लछ्मिमी—हम तोहार सिखावल कुलि मानव सीता ! बाकी इमान-धरम से कहिहा, पुरान में होऊ सालिगराम के पूजा से मेहरारूके छप्पन कलप नरक में जाये के बात तहरा के ना हम कालै पढ़ौनी ?

सीता—हम ई नानु कहतानी, बाकी चाची के समने नानु कहे के ?

रामकली—साचै बिटिया ! पोथी में ई बात लिखल बा ।

[ऊधोपरसाद आ गइलें]

सीता—चाची ! ऊधो भैया आ गइलें एनहीं से पूछ ।

लछ्मिमी—आ हम पोथिये उठा लिआवातानी । (धउरि के एगो बड़का पोथा ले आइल, आ खोलि के ऊ पतराँ ऊधो के समने धड देहलस् ।)

रामकली—पढ़ त बबुआ ! साँचे एमें मेहरारू के सालिकराम के पूजा बरजित हवे ?

ऊधोपरसाद [संसकीरत में पांती पढ़िके]—साँचे माई ! ई त छप्पन कलप नरक के बासा लिखल बा ।

रामकली—[मुँह पीअर कऽके]—छप्पन कलप नरक ! आ हम सालि भर से पूजा करतानी ? ई धरमो के काम कइला में पाप होला ?

लछ्मिमी—धरम उहै कहाला, जौन पोथी में लिखल रहेला ।

रामकली—फेनु गुरुबावा काहे सालिकराम के हमरा के देहलें ?

लछिमी—गुरुबाबा कुलि पुरान नानु पढ़ले होइहैं । हेइसन हेइसन ना जानी कैंसो पोथी बा ।

रामकली—तेंही बताव बबुआ ! अब का करैके चाहीं ?

ऊधो—जानि के पाप कइला के औरू बेसी पाप होला, माई !

रामकली—त हई ठाकुर जी के का करैके ?

ऊधो—ई त सोचै के परी माई !

लछिमी—अ भइया ! लछिमी पंडित के ठकुरबारी में दे अइला से कैंसन होई ?

ऊधो—हाँ, निमन त होई, बाकी भोग-राग खातिर किछु देवै के परी ।

रामकली—का देवै के परी बबुआ !

ऊधो—पूछै के परी माई ! बाकी साँभ-सबेरे एक-एक पाव मिठाई, एगो सीधा, आ धूप-बत्ती खातिर चारि गो पैसा से का कम लागी ?

रामकली—केतना परी बबुआ !

ऊधो—आस् सेर मिठाई चारि आना, धूप-बत्ती एक आना, एगो सीधा तीन आना, कुलि आठ आना भइल माई !

रामकली—आठि आना रोज !

लछिमी—ला खुब पूजऽ सालिकराम के ? ओ अबहिन ई सालि भर पुजलाके पराछित जे करै के परी ?

रामकली—पराछितौ !

ऊधो—ई त ठाकुर जी के आगे के इतिजाम नु करे के खरच हवे । नाहीं त माओ ! तू त पूजा छोड़ि देहलू, फेनु जे ठाकुर जी उपास परिहैं, त ओकर पाप घर भर पर नू पड़ी ।

रामकली—(कपारे पर हाथ ध के) तोहार बाबू त एको पैसा दीहैं ना, ऊ त ठाकुर जी के घर में रखही के खेलाप रहलें । अन्छा ले जा, दी आवा लछिमी पंडित के ठकुरबारी में ।

ऊधो—आ महीना भर के भोगराग के पनरह रुपया नु चाहीं माई ?

रामकली—पनरह रुपया महिन्नै महिन्ने ! ई त हमार कुलि कोसिला के रुपया एही में चलि जाई ।

ऊधो—साल में एक बीस कम दुसै, पाँच साल में नै सै माई !

रामकली—पाँच सै त रुपयवा बा बबुआ !

ऊधो—पौने तीन बरिस चली, फेनु ठाकुर जी के उपास करै के परी । जौना महिन्ना रुपया बंद भइल, ओही महिन्ना माओ ! ठाकुर जी लउटि अइहें ?

रामकली—हे भगवान् !

[रामकली रुपया ले आवे गइलीं ।]

ऊधो—लछिमी ! देखा अब पनरह रुपया महिन्ना भर मिठाई खाये के इतिजाम भइल । ठाकुर जी रहिहें हमरा बाकस में, सिगरेट के डिब्बा बा, ओही में ।

लछिमी—आ कहीं माई लछिमी पंडित के ठाकुरबारी से पुछ-वावै तब ?

ऊधो—बात त ठीक कहत बाड़ू । बाकी अबहिन त माओ के परा-छित के फेर में नु डारे के बा ।

लछिमी—पराछित !

ऊधो—हाँ, जे पोथी के हुकूम के खेलाप एक बरिस पुजली हौं ।

लछिमी—ठीक ।

ऊधो—ई बड़ मजगूत पकड़न पकडले बानी । गुरुओ बाबा के समने जे ऊ पोथी धराई, त सिटपिटाई जइहें ।

लछिमी—आ, जे ठाकुरबाबा के माँगि लें तब ।

सीता—हम एगो सलाह दी भइया !

ऊधो—कहु न सितिया !

सीता—चिन्ता करै के काम नइखै, पराछित के डरवावन में चार महीना खेपि देवै के, ज एही बीच गुरुबाबा आ गइलें, त ठाकुरै जी के नु मँगिहें, बकसा खोलि के दे दियाई ।

ऊधो—ई ठीक सलाह बा । पराछित के भै जबले रही, तबले मात्रो ठाकुर जी आ ठाकुरबारी के नाँव ना लीहें ।

(रामकली लेआके पनरहू गो रुपया ऊधो के हाथ में देहलीं, औ ऊधो ठाकुर जी के मौनी उठौलें । लछिमी औ सीता के ओठ ले “रामनाम सत्त ह” आ गइल रहें ।)

[परदा गिरत-आ]

अंक ४

[लछिमी, सनके एइसन केस औ सूत से मढ़ल चसमा लगौले सूखा फूआ औ रामकली बइठल बाड़ीं ।]

सूखा—सुनलू इ, रामकली ! आज मनुसपलटी के घर में सभा करे गइल रहलीं मेहरारू सब ?

रामकली—सुनली हाँ, फूआ ! आजकल के मेहरारू के किछु मति पूछी ! देहि जरिजाति-आ, देखि-देखि के कुफुति होति आ । रिकसवा जन्न ले छपरा में ना आइल रहै, तब ले निमनो रहल । बगी के केरयवा बेसी नु लगत रहल हा । आ अब त घर के घर खाली हो जात-आ, आज का त साभा हवे, आज का त सिनामा हवे ।

सूखा—महल्ला में बस रामकली ! हमरै तोहरा ले बा, नाहीं त कलि धरम-करम छाड़ि देहली ।

रामकली—हमरौ घर में फूआ ! एक जनी हेई लछिमी अतार लेहले बाड़ीं । एनकर चौबीसो घंटा सभे लागल रहैले ।

लछ्मिमी—माई तें सभा से काहे नराज रहैलिस् । बुभुवो ना कइ-
लिस् कि सभा कौना खातिर भइल रहल हा, आ एक-ओरा सें दूसै लगलिस् ।

रामकली—बुभुले बानी । हमरा खन्दान में केहू ना बुभुले रहल
हा, ई त एगो तुहीं न बूभैवाली जनम लेहले बाडू ?

लछ्मिमी—अच्छा ई त बताव माई ! आमी अत्थान में बग्गी में
गइला पर कौनो हरज ना, काली अत्थान रिक्सा धौरौला में कौनो हरज
ना, मेला-ठेला में देह छिलौला में कौनो हरज ना, औ ई टावनहाल में
भले घर के सौ-पचास मेहरारू बइठि के किछु बतियावैलीं, त एमे काहे
ब्रह्मंडल टूटि के गिरे लगेला ।

रामकली—सुना फूआ ! आमी अत्थान, काली-अत्थान देवी-
देवता के पूजा-दरसन, आ हई मुंह खोलि के तावनहाल में बइठल बरो-
बर बा ?

सूखा—चारो ओर एकै बयार बहति-आ रामकली ! तोहरे
हमरे पीढ़ी ले पुरिखन के मरजाद बा, अब ना रही बबुई ! हम त साँभे-
सबेरे सुरुज नरायन के मनाई ले, कि सूखाके अब ले चलसुं ।

[सीता आ जसोदरा अइलीं]

दूनो—गोड़ लागतानी सुखा फूआ !

सूखा—(आँखी पर हाथ से छाँह करके) के हा ?

लछ्मिमी—सीता आ जसोदरा अइली हाँ फूआ !

रामकली—एकै आँवा कै पकवल, फूआ !

सूखा—ना सितिया बबुनी निम्नन बेटी ह रामकली !

रामकली—हमहूँ इहै समुभत रहनीं फूआ ! बाकी एक बेर चारि
महिन्नाले ई हमरा के ठगि-ठगि के मिठाई खाति रहलीं ।

सीता—हमनी के नहके नु अजस देत बाडू चाची ! ऊधो भइया नु
कुलि कइलें ।

रामकली—आ पोथिया उठा के उधवे ले अइलें ?

लछ्मी—मुदा पोथिया के त माई ! गुरुआो महराज देखि के साचै नु कहले ?

रामकली—आ कहि दा कि साठि रुपया के मिठइया खाये के गुरुवे महराज कहलें ।

सूखा—साठि रुपया के मिठाई !

लछ्मी—चारि महिन्ना में अठठ आना रोज फूआ ! आठि गो लइका जमा होइ जाँसु एकेको गो मिठाई त ना परे । आ फेनु ई भइया के करनी हवै, हमनी के कौनो खसूर नइखै फूआ !

रामकली—आ चारि महिन्ना ले ठाकुर जी के सिगरेट का गोलका डिब्बा में बन्न कइके रखले रहे फूआ । ई हतियारी नु बा ?

सूखा—बिना भोग-राग लगौले !

लछ्मी—गुरुमहराज कहले बाडें फूआ ! कि भोगराग लगौला ना-लगौला के कौनो पाप-पुन्न नइखे ।

सूखा—चारि महिन्नाले ठाकुर जी उपास परिहें, आ पाप-पुन्न ना लागी । ए भाई ! ई छौड़िन के का हो गइल बा ?

लछ्मी—जे चारि महिन्ना के उपास के पाप-पुन्न लगित, त माई के साल भर सालिकराम पुजला के पाप के फल छप्पन कलप नरक के बास होइत फूआ ! गुरु महराज कहि देहलें, कि ठाकुर जी के परानपतिट्टा ना कइले रहलीं, एही से पाप-पुन्न किछुआो ना भइल ।

रामकली—ई बात ठीक ह फूआ ! मुदा ठाकुर जी के चाहे परानो-पतिट्टा ना भइल हो, सिगरेट के वाकस में नानु राखैके ?

लछ्मी—ऊ हमनी के खसूर नइखे माओ ! अपना बेटा से पूछा ।

रामकली—बेटे नानु अकेले मिठइया खइले ?

सूखा—आ दुत् तोरा की, ए देवतो से खियाल कइल जाला ?

..सोदरा—लछ्मि दीदी ! आज हम सभा में न जा सकनी, सुनावा, संकरपुर के बहुरिया बेचारी के बारे में का परसताव भइल ?

सूखा—संकरपुर के बहुरिया कवनि, बहुरिया धनराजी कुंअरि ?

लछ्मि—हाँ, फूआ ! बहुरिया धनराजी कुंअरि सौ गाँव के मलि-काइन, रायबहादुर के मरते दयाद दावा के देहलें, कि बहुरिया जैजात बरबाद क दीहैं; इनके खोरिस मिले के चाहीं, आ जैजात के मालिक हमनी हवीं ।

सूखा—बहुरिया धनराजी कुंअरि बड़ लायक मेहरारू हवीं बेटी !

सीता—बहुरिया के देखलें बाडू फूआ !

सूखा—आमी अहथान में भेंट भइल रहे बेटी ! ध के अपना तम्मू में ले गइली, हमार केराया के घोड़ागाड़ी लौटवाय देहलीं, आ रातिभर ना आवे देहली । का केहू बेटी-पतोह वैसन सेवा करी ?

लछ्मि—बहुरिया के बेटा-बेटी नइखे फूआ !

सूखा—(आँखिमें लोरि भरि के) से हम जानीले ।

लछ्मि—आनकर हिच्छा वा, कि जेतना देस के लइकी बाड़ीं, ओही सबके आपन लइकी मानि के ई कुलि धन खरच कइल जाव ।

सूखा—बहुरिया बड़ लायक बाड़ीं बेटी ! हमार अस्सी बरिस के उमिर भइल, नाती कै नाती देख चुकनीं, मुदा एइसन लायक मेहरारू ना देखनीं—हाँड़ी परिखीं बरंबार, अदिमी परिखीं एकै वार ।

लछ्मि—त आज टावनहाल में सभा बहुरिये खातिर भइल रहल हा ।

सूखा—का भइल ह बेटी ?

लछ्मि—छपरा भरिके पाच सँ मेहरारू जमा भइल रहलीं हाँ । जज, वकील, मुस्तार, बलिहटर, हाकिम-हुकुम, अमला-फइला सबके घरके मेहरारू आइल रहली हाँ । जज साहेब के मेहरारू सभापति भइल

रहली । सभा में सरकार के कहल गइल कि राजकाज बहुरिया के हाथ से ना छिनल जाये के चाही ।

सूखा—राज-काज छिनात-आ बेटी ?

सीता—सुनलू ह ना फूआ ! बहुरिया के दयाद लोग मोकदमा कइले बा, कि मेहरारू के जर-जमीन पर हक ना होला, ऊ खाली खोरिस पा सकेले ।

लछ्मि—बोल फूआ ! जेकर पति सौ गाँव के मालिक रहै, आज बेटा रहित, त ऊ मालिक होइत; अब घर में बहुरिये रहि गइनी, त ओनकर हक ना होए के चाही, काहे से कि ऊ मेहरारू बाड़ीं ? तें देखले ही बाडिस्, बहुरिया कौनो मरद से कम लायक नइखी ।

सूखा—से लछ्मि बबुनी ! तोहार बात सोरहो आना ठीक बा । बहुरिया ऐसन इतिजाम करैवाली मेहरारू ना मिली । हम ओनकरा खवास-खवासिन, नौकर-चाकर के देखले बानीं, ओनकर इतिजाम एक-एक बात में देखात रहे ।

लछ्मि—त बहुरिया के मालिक ना होवे दीहल जात-आ, ए में ओनकर इहै खसूर नु बा, कि ऊ मेहरारू हवी ? मेहरारू होखल का कौनो पाप हा ?

सूखा—मेहरारू के जाति त छोटे कहल जाला बबुनी ! मुदा बहुरिया केहू मरद से कम बाड़ी, ई हम ना मानव ।

लछ्मि—सूखा फूआ ! ज तू खाली बहुरिया के पच्छ लेके कहबू, त ना सरकार मानी, ना हाकिम-हुकुम कौनो खियाल करिहैं । ज समुच्चा मेहरारुन के हक खातिर कहबू, त इनरासन डोल जाई ।

सूखा—चाहे जैसे होखो, लछ्मि बेटी ! बहुरिया के हई हक ना छिनाये के चाही ।

लछ्मि—फूआ ! सरकार कहति-आ कि बहुरिया लायक हवीं,

ई मानें में उजुर नइखै; मुदा मेहरारू जाति के जमीन के मालिक होखल ई अइन-कनून से बहरे के वाति ह । बहुरिया मेहरारू ना होइती, त उनकरा के पूरा हक मिलित ।

सीता—आ फूआ ! ई एगो बहुरियै के बात नइखे । केतना पीढ़ी बीति गइल, ना जानी केतना बहुरिया हकसे बेहक कइल भइलीं, आ आगेहू कइल जइहैं, जौ हमनी अपना हककै दावा ना करब ।

लछ्मी—अरौ देखैलिस् नु फूआ ! चाहे घर-फूंकू बेटा होय; ओकरा के बाप के जैजात मिलै में कौनो उजुर नइखै, मुदा मेहरारू केतनो लायक होय, ओकराके हक ना मिली, एके नियाव कहल जाय सकेला ?

सूखा—ई हमरो तनी तनी समुभि में आवत-आ ।

लछ्मी—हमनी मेहरारू सब ई नइखी चाहत, कि मरद के कौनो हक ना मिले । मुदा हमनी ई बात ना मानि सकीले, कि बेटा सोना की डिबिया में से आइल बा, आ बेटी इमिली के खोड़रा से ।

सूखा—दूनों एकै ओद्रसे आवेला बेटी !

सीता—आ मेहरारू के नीच-नीच कहल जाला, जे मेहरारू नीच होइत त ओही से जनमल मरद ऊँच कइसे हो जाला ?

सूखा—इहो बात ठीकै कहत बाडू सीता बेटी ! बलुक मतारी के उपकार मतारी के सासत-कहट देखिके त ओकरै के बड़ माने के चाहीं ।

रामकली—तुहँ फूआ ! छौंड़िन के फेर में पड़ल जात बाडू. ?

सूखा—निम्नन बात कहत बाड़ीं सन्, त काहे न माने के चाहीं बेटी ? नौ महिन्ना पेट में राखिके पोसल, फेनु कै बरिसले अपने गीला में रहिके बच्चा के सूखा में सुतावल, अपना देहिके जिउ खीचिके बेटा के दूध पिआवल, ई कुल ऐसन काम हा, जे मरद कबहुना कइ सकैला बबुई ?

लछ्मी—फूआ ! इहै वाति हमनिओ कहीले । काहे मरद आ

मेहरारू के दु आँखिसे देखल जाला ? जैसन बेटा वैसे बेटि के माने के चाहीं ।

सूखा—इहौ ठीके कहति-आ बिटिया । बेटा के जनम में मतारी के थन में दुसरा तरह के दूध अवेला, बेटि के जनम में दुसरा तरह के, ई त ना देखल जाला ? फेनु काहे दूनों के दु आँखि से देखल जाई ? इहै दु आँखि से देखला के फल हा, कि संकरपुर के बट्टरिया के लायक रहतौ हुनकर हक छीन लीहल जात आ । ह, नु बेटि लछिमी ?

लछिमी—इहे बात हमनी के सभा में भइल हा । हमनी कहलीं हाँ, कि मुसुरमान में बेटि के जैजात में हक होला बेटा के बराबर ना, मुदा ओकर हक दियाला । किरिस्तानों में बेटि के मतारी-बाप के जैजात में हक होला, फेनु हिन्नु की बेटि-मेहरारूके काहे हक ना मिली ?

सूखा—त दुसरा दुसरा मजहम में बेटि के हक मानल जाला बेटि ?

लछिमी—हाँ फूआ ! आ हिनुतान से बहरा कुलि दुनिया-संसार में बेटि के हक मानल जाला ।

सूखा—फेनु हिनुतान में हिन्नूलोग काहे ना मनलस् बेटि !

लछिमी—मरद लोग के सुवारथ । जे हमनिअौ अपने जैजात के मालिक होइतीं, ता “ढोल गँवार सूद्र पसु नारी । ए सब ताड़न के अधिकारी ।” नानु, होइतीं ?

सूखा—त बेटि ! हमनी के कहला से जैजात मिले लागी ?

लछिमी—जरूर फूआ ! हमनी जे पहिले से जोर-जोर से कहले होइतीं, त हमनी के हक मानि लीहल गइल होइत । मुदा हमनी चुप लगा गइलीं, मरद लोग सरकार के समुझा देहलै; कि मेहरारू के धन के कोनो खाहिस नइखे ।

सूखा—ई बात भूठ हवे बेटा ! धन के खाहिस ना होइत, त मेहरारू आपन कोसिला काहे रखतीं ?

लछ्मी—आ जैजात होइत ता पेट काटि-काटि, कौड़ी-कौड़ी बचाइ के कोसिला राखै के कवन काम रहित ? ऐही से हमनी सभा में लिखि के सरकार के पठौनी हाँ, कि जैजात में मेहरारू के उहै हक माने के चाहीं जौन मरद के हबे ।

सीता—आ इहौ फूआ ! कि जैसे एक मरद अछतें मेहरारू दुसरा मरद के ना वियाहि सकैले, वैसे मरदौ एक मेहरारू के रहतै दूसरा मेहरारू से वियाह ना कर सकै ।

सूखा—इहौ ठीक ।

लछ्मी—आ इहौ कि राजकाज चलावें में बहुरियाजी के उहे हक होखे के चाहीं जौन रायबहादुर के रहे ।

सूखा—इहौ ठीक ।

लछ्मी—जैसे बहुरिया जी के राज-काज चलावे में मरद के बरो-बरे हक मिले, वैसेहीं सरकारी राज-काज चलावे में कुलि मेहरारू के मरद के बरोबर हक होवैके चाही ।

सूखा—बेटा ! जे मेहरारू के सभा में ऐसन निम्नन बाति होले, त हमरौ के ले चलिहे ।

[सब मिलि के गीत गावत बाड़ीं]

उठु उठु रे तें भुखवन्हई, उठु रे धरतीके अभगिया ।
 बा न्याव बजर घहरावत, जनमत बढ़िया संसरवा ॥
 पुरुबिज फिनु नाही बान्ही, उठु रे अब नहि तें बन्हई ।
 नइ नेंव उठत वा जगवा, ना रहली सब किछु होइबी ॥
 आ जुटहु नु सखिया समुहें, ई आखिर बेरि लड़इया ।

[परदा गिरि गइल]

नइकी दुनिया

नाटकके खेलाड़ी

१—बटुक	मुखिया खेलाड़ी
२—रामधनी	बटुक के बाप
३—सुकहुल्ला	गँवई पंच
४—सुखारी	सर पंच
५—रामदेव सिंह	बूढ बाबू
६—विसुनदेव परसाद	बूढ देवान
७—रमेसर तिवारी	बूढ बाभन
८—सोना	बटुक के मेहरारू
९—जगरानी	बटुक के आजी
१०—सुगिया	गँवई पंच
११—बतुलिया	” ”
१२—महदेई	” ”

नइकी दुनिया

अंक १

[गीत गावल जाति-आ]

नइकी दुनिये के बसौले, ई कुलि दुखवा जाई ना,
जहवाँ न केहुये छोट बड़ लोगवा, सब्ब भाई-भाई ना ।
केहुके त गाँजल बाड़ें अनधन सोनवा, केहु भुखिया तड़फै ना,
केहुत नहाला नित अतर-गुललवा, केहु पनिआ तरसै ना ।
कबहुँ न देखलै जे घमवा-बतसवा, नाहीं जड़वा जनलै ना,
कोठवा बइठिके धोखवाके बलवा, से जगवा लुटलै ना ।
आवा हो आवा मोरे भइया बहिनिया, सब हिलमिलि लागीं ना,
चमवा के द्याड़ि जब कमवा पियार होई, तबे भुखिया भागी ना ।

[रामधनीसिंह ओनकर मतारी जगरानी अइलीं]

जगरानी—बबुआ ! तें पहिले जब गान्हीबाबाके नून बनौला
में जेहल गइले, मारि खइले, ओहू बखत हमार करेजा काँपत रहल ।

रामधनी—काहे माई ! रजपूतिनके करेजा काँपी, लइकाके जेहल
गइला में ?

जगरानी—तब जेहल जायेके बात पहिले पहिल सुनलीं नू । आउर
तें हमार एकैगो बेटा, एकैगो बतिहर जिनगीके अवलम् । केतना अतवार
केतना एकादसी भुखनीं । बाबा बैजनाथ किहाँ जाके धरना देहनीं, तब

भगवान् तोरा के देखें। जब से कोखमें अइले, तब से तोराके अँखिये बना के रखनीं। कै बेर सोगियानौनी डाइनि तोरा पर नजर गड़ौलीं सौं, मुदा कालभैरव बाबाके गंडा जब से तोरा गरमें डार देहनी तौने दिनसे सलतनत भइलीं।

रामधनी—गंडा त केतना दिनसे हम तुरके फेंक देहनीं।

जगरानी—तू नु तुरि फेंकला, मुदा जबले घरे सुतत रहला, तबले हम खटिया में बान्हि देत रहनीं। आ जब पतोहिया आइल त ओही के कहनीं—‘बेटा ! हेई गंडा आठो पहर बतीसो घरी पहिरले रहिहा ।’ ओइसे त हमार एको बात ना माने, मुदा ई बाति मानि गइलि ।

रामधनी—त माई ! तोराके अपना पतोहियाके मुवलाके दुख नइखै ?

जगरानी—दुख काहे ना होई, बबुआ ! मुदा ऊ बड़, बेकहल रहे। अब त बेचारी के भगवान ले गइले, अब सिकाइत कइला में अप-राध बा।

रामधनी—गाँवके लोग त कहत रहै, कि जगरनिये के मुँह करजिरी लेखाँ तीत ह, ऊ पतोहिया के फुटिलउ अँखि देखै ना चाहें।

जगरानी—कवन कहलै ह सोगियानौनी, हमराके पहिले नु बतावेके चाहत रहल।

रामधनी—त ते भगरै नु करतिस् ?

जगरानी—हमार घर फोरि देहलीं बबुआ ! इहै गाँव भरिके भतराचबौनी मिलि के।

रामधनी—मति गरियाउ माई ! अब त पतोहिये नइखे, घर कैसे फोरिहै।

जगरानी—पतोहि ले आइब नू।

रामधनी—पतोह ले अइलू, कि गाँव भरिके भतराचबौनी मिलि

के तोहरा घरके फोरि दीहें, आ तोहरेके अपराध लगइहें, कि जगरानी एगो पतोहके त मुवौलीं, अब दुसरोके मुवावै चाहत बाड़ीं। आ कतहूँ पतोह जब्बर मिलि गइल ? हमरा त कै कै दिनले घरे ना आवै के परैला, आ जे भोंटाभोंटी क के हमरा बुढ़िया मतारी के मुवा देलस्, त हम का करब ?

जगरानी—तोर गुन हम मानव बबुआ ! तें कबों मेहरारूके पच्छ ना लेहले; गाँव भरके पुतकाटी पतोहिये लेखा तोरौके बिगारे चहलीं, बाकी तोर नेति तनिको ना डिगल।

रामधनी—कैसे डिगित माई ! तें हमराके पालि-पोसिके बड़ कइली, कि तोर पतोह ? आ मेहरारूके मुअला पर केतना मेहरारू मिलिहें, मुदा मतारी मुअला पर मतारी नानु मिली।

जगरानी (आँखिमें लोर भरिके)—ऐसन बेटा कौनो मतारी के बा ? भुइली में त ना हवै। बेटा ! पाँच बरिस हो गइल पतोहिया के मुअला, अ केतना बेटिहा आवत बाड़न। ऊ हरपालपुर में हमरा नइहरा के बेटा निम्मन बा, एहि साल बियाह होइ जाव।

रामधनी—जो महिन्ना में ई पाँचो-सात दिन जे तोहरा हाथ के बनावल भात मिलत-आ, एहू के छोड़ावे के मन होय, त बियाह के बात करिहा। भले बारह बरिस के नाती बा, ओही के कालभैरव के गंडा पहिरावा।

जगरानी—ऊ गंडा पहिरी ! ओकर चले त हम कौनो बरत ना करे पाई। तीन बेर पलखत पाँते हलुवा में नून डाल देहलस्। बेटा ! बरजु ना, सुरुजनरायन के बरत तोरला में बड़ पाप होला।

रामधनी—तुहई बरजा, तोहरे नू मुँहे बेसी लागल बा।

जगरानी—हम त बरजि के हारि गइनीं। ऊ देवता-पित्त के का मानी ? [एने-ओने देखिके आसते से] ऊ त सुकृलवा के घरे जाके मुरगीके अंडा खाला। एक दिन ले आके हमराके कहलस्—

‘इयवा ! इहै नरबदेसर के पिंडी तोरा के पूजा करे के ले अइली हाँ ।’
साँचे बबुआ ! उज्जर-उज्जर चमकत रहै, जैसे हमरा गुरुबाबा के पूजा
में नरबदेसर बाबा बाड़न् ।

रामधनी—त तें एको दिन पूजा कइलिस् कि ना माई ?

जगरानी—बड़ उतपाती लइका हा बबुआ ! आ कहाँ से कुलि
अक्किल सीखि गइल बा । हमरा से नइकी मौनी नयका लुग्गा मँगौले,
फेनु हमरै हाथे गत्ते से ओही पर रखवौले । हम समुभनीं, साँचे नरब-
देसर बाबा हवें ।

रामधनी—त बेलपत्तर-वत्तर चढ़वली कि ना ?

जगरानी—हम अबहिनले तुलसी माई के जल ढारि के गोड़ लगले
ना रहनी, हम नहाये में लगनी, ऊ धउरि के बेलपत्तर उतारि ले आइल ।

रामधनी—त तें समुभलिस् कि नाती अब देवता-पित्तर के बड़का
भगत हो गइल बा ?

जगरानी—हाँ, बबुआ ! ऊ कहलस् कि इयवा ! मेहरारूके
सालिगरामके पूजा बरजित ह, मुदा नरबदेसर बाबा आ तुलसी माई
ई दूनो परानीके पूजा नइखे बरजित ।

रामधनी—त तें तुलसी माई के नरबदेसरके मेहरारू समुभि
लेहलिस् ?

जगरानी—ओहि वखत ऊ जैसे बतियावत रहे, हम कुलि विसवास
क लेतीं बेटा !

रामधनी—त तें पूजा-डंडवत कइलिस् माई ?

जगरानी—मति किछु पूछा बेटा ! ओकरा कहलै लेखाँ फुलकै
हाथे पानी में बुड़ाके मौनीमें रखनीं । बेलपत्तर चढ़ाके धूप, आ मिसरी
के भोग लगौनी । फेनु हम चाहत रहनीं चनाइमिरितवाके तुलसी माईके
थालामें ढारेके, त ऊ कहलस्, ना इयवा ! चरनाइमिरित दूसर महादेवके

ना नरबदेसर बाबाके हा, एमेंसे हमरो के थोरा दे आ थोरा अपनेहू पिउ ।
गुरुबाबा इहै चरनाइमिरितवा नु देलें ।

रामधनी—त तें पियलिस् माई !

जगरानी—आ-न-क्, आ-न-क्, आ-क्-का-क्-का-क् ।

रामधनी—[धउरि के गरदन सुहराबै लगलें ।] जाये दे माई ।

ऊ बड़ बदमास लइका ह । तें मरलिस् ना ?

[बीच में नाती बटुक ठाठके हँसत चलि आइल ।]

बटुक—इयवा के बाति हम कुलि सुनली हाँ बाबू !

जगरानी—ते सुनले हा कुलि बाति ?

बटुक—तनि बतिया पूरा क देवे दे त इयवा ! फेनु एगो बड़ निम्मन
बात सुनायेब, सुनि के तोर मन खुस हो जाई ।

रामधनी—माई के तें हरान करैले, (चिल्लाके) अच्छा ले आव-
तानी छड़ी ।

जगरानी—(नातीके अँचरामें लुकवाके)—ना बबुआ ! लइका
खसूर करेला, त, ओके मारै के नानू ।

रामधनी—त तुँही नू सहकावत बाडू माओ ! नाहीं त हम एक
दिन में ठीक क देतीं ।

जगरानी—किछुओ करै हमरै नु नाती हा । [बटुक आजी के
अँचरा में लुकाइल बाप की ओर मुँह फेर के हँसत-आ]

रामधनी—औ ई जे माई के नरक में भेजलस् । नासकेत के कथा
में नरक के बात सुनले नु बाड़ी माई !

जगरानी—कै बेर बबुआ ! आ ओहू से बेसी विरह-विसेख
त गरुलपुरान में बा । गुरुबाबा पतोहिया के मुअला प सुनीले
रहलन् ।

रामधनी—संसकीरत तें कैसे बुभलिस् ?

जगरानी—नरक के बखान जँहवा रहल, ओकर अरथ नु क के सुनौले रहलन् ।

रामधनी—हाँ, माई ! हमरो मन परत-आ । त बोल माई ! जवन नाती तोरा के कुम्भीपाक औ रौरव नरक में भेजत-आ, ओकरा के तें दुइओ छड़ी ना मारे देत बाडिस्, ई निम्नन हवे ?

जगरानी—मुदा बेटा ! जुरते बता देहले, आ हम साति दिन खाली पानी पी के उपास रहनीं ।

रामधनी—छाड़, माई ! छाड़ एइसन् बेटा के हम घर में ना रहै देव ।

[हाथ बढ़ावत बाडै, जगरानी अउरि लुकवा के]

जगरानी—ना मोर सुग्गा । इहै एगो बतिहर बा (आँखि में लोरि भरि के) एकरा घर से निकरला पर हम ना जीअब् । लइका के खसूर छमा नू करै के होला । हमार कुलि पाप धोवा गइल, सात दिन बरत रखला से वचबा ! आ मोर नाती जे ना बतौले होइत, त बरत नानू कइले होतीं, फेनु त अनचक्के में नू जमराज एकै बेर सजाय सुनौतें ।

रामधनी—त माई ! तोरा पूरा बिसवास बा नू, कि अब तोरा के नरक में ना जाये के परी ?

जगरानी—हाँ बेटा ! हम गुरुओ महाराज से पूछि लेहले बानी ।

रामधनी—का ? कि अंडा के धोवन पियला के पराछित सात दिन के उपास से हो नू जाला ?

जगरानी—अंडा के नाँव कैसे लेइब बबुआ !

रामधनी—तब का पूछलिस् हा ?

जगरानी—कि भूलि-चूक से कौनो खसूर हो जाय, त सात दिन के उपास से छुटि जाला कि ना ?

रामधनी—खसूर माई ! छोट बड़ केतना तरह के होला । पहिले त इहौ पूछे के चाहत रहल नू, कि ई छोट खसूर हा, कि बड़ ।

जगरानी—ई कैसे पूछितीं बेटा ! फेनु गाँव भर सुनि लीत, त रजपुतन के मेंडर में मुँह देखावे लायक रहता ?

बटुक—(मुँह निकार के) समुच्चा गाँव जानत-आ इयवा !

जगरानी—(घबरा के) समुच्चा गाँव ! तें त ना कहले ?

बटुक—ना इयवा ! एगो खसूर भइल उहै बहुत रहै । रमदेइया फूआ ढुक्का लागि के कुलि देखलस् ।

जगरानी—(गुस्सासे लाल होके हाथ मलत)—जा रमदेई ! ससुरा चलि गइलू, नाहीं त आज जगरानी के महभारत देखतू ।

रामधनी—ई त भुइली भर के राजपुताँव जानि गइल, अब का करे के ?

जगरानी—(रोवत) अब हमार घर बूड़ल ! हे भगवान् ! अब के हमरा नाती के आपन बेटा दी ।

बटुक—ना दी, त हम कुँआरे रहब इयवा ! तें रोअत काहे बाडिस ?

जगरानी—(अउरि जोरसे रोवत) के हमरा के पिंडा-पानी दी ! हाय रामजी ।

बटुक—तोरा के पिंडा-पानी हम देब इयवा ! मति रोउ, मति रोउ इयवा ! नाहीं त हमरो रोआई छूटति-आ ।

जगरानी—(आँखि पोंछि के)—ना मोर अँखिया ! तें मति रोउ ।

रामधनी—त माई ! तोरा नरको से बेसी डर बिरादरी के बा नू ?

जगरानी—वरत-उपास, दान-पुन्न से नरक से अदिमी बंचि सकैला बेटा ! मुदा बिरादरी के कोप से बाँचे क त कौनो उपाइ ना नु बा ।

बटुक—विरादरी काहे कोप करी इयवा !

जगरानी—इहै जे रमदेइया—ओके हैजा उठा ले जाउ ।

रामधनी—हैजा मति माई ! हैजा गाँव भर खातिर आवेला,
एगो अदिमी खातिर ना ।

जगरानी—उहै रमदेइया जे गाँव भर आग लगौलस् । अब त
तहार हुक्को-पानी बन्न भइल नू ?

बटुक—हुक्का-पानी के बाति मत कर इयवा ! ऊ केहूना बन्न
क सकेला ।

जगरानी—कैसे बबुओ !

बटुक—रजपुताँव में केकर लइका बा, जे सुकरुलवा आ हमरा
साथे अतवारै अतवार मुरूगीके अंडा ना खात-आ ?

जगरानी—(संतोख देखावत)—साँचे बबुओ !

रामधनी—देखु माई ! एक अदिमी के चरनाइमिरित पियला-
खइला से त तें रोवै लगलिस्, आ गाँव भरि के सुनला से तोरा मन में खुसी
होति-आ ।

जगरानी—अब हमरा के केहू जात से छाँटैवाला नइखे नू ?

बटुक—हमनी का जानत रहनीं इयवा ! ई त बनारसी काका
के एक दिन खात देखनीं, ओही दिन से हमनिओ परकनीं । भुइली के
वारहगो लइका हमनी बानीं । अतवारै अतवार सुकरुलवे के घरे बारहगो
हमनी खातिर ओ एगो सुकरुलवा खातिर तेरह अंडा उसिनल
जाला ।

जगरानी—राम-राम ! ओही के बधना के पानी से ।

बटुक—अंडा जब ओकरा घर के बा, त पानी में कवन छूत
लागल बा ?

जगरानी—मति खो बबुआ ! ऊ कइसन उज्जर-पीयर रहेला ?
ओहि दिन जे तें फोरि के खइले ।

रामधनी—तोरा समने माई !

बटुक—उहँ नरबदेसर के एक दिन खइनीं, अउरि फेनु कहाँ ?

जगरानी—मति खो बबुआ ! गुरुवाबा अइहें, त सुनिहे नरक
में कइसन-कइसन सासत सहे के परेला ।

बटुक—ओइसन-ओसन खिस्सा इयवा ! किताब में बहुत लिखल
वा । आ नरक में जाई त समुच्चा भुइली के रजपुताँव जाई, तब न इयवा !
तोरा के जाये के परी ।

जगरानी—हमरा ना जाये के परी, हम त सात दिन बरत कइले
बानी ।

बटुक—आ हम जे अतवारे अतवार नरबदेसर के खा के तोर चूल्हा-
चौका, बरतन-भांडा पवित्तर करतानी ।

जगरानी—(मुँह गिरा के) हे राम जी !

रामधनी—जाये दे माई ! दुनिया उलटति-पलटति-आ ।

जगरानी—साँचै बबुआ ! हमरा आँखै के समने दुनिया कहाँ से
कहाँ चलि गइलि । हमरे नु हाड़-मांस ह ई हमार नाती, आ बरहे बरिस
में देवता-पित्तर धरम-करम सबकै उपहास करत-आ ।

रामधनी—अउरो दिन बीते दे माई ! फेनु देखिहे कइसन धरती
तरकै उप्पर होले ।

जगरानी—कुलि होई बेटा ! कुलि होई, भगवानै औतार ले के
आवें त धरम बँची ।

बटुक—औ जे कछ-मछ से सूअर ले औतार लीहें, त इयवा ! हमनी
हुनकरा के ना छाड़ब ।

[परदा गिरि जात-आ ।]

अंक २

[उरिदी में लपटेन बटुकसिंह गावत बाड़न्]

ढाहा भइल पुरनका घर ई, नइकी नेवें करा तइयार ।
 नई हवेली सिरजा भाई, नयका होई अब संसार ॥
 स्वारथ लागि समर ई ठनलें, राछछ जरमन औ जापान ।
 चहें बँचावें पुरना घरवा, राखै तोन्-फुल्लन के सान ॥
 गहि के तेगा जूभत बाडें, जगके सबै मजूर-किसान ।
 लाल फउजि के पाछे-पाछे, हाथ में लेहले लाल निसान ॥
 अन बिन तलफत जँहवा लइका, जहँवा उठत गरीब क आह ।
 जहँवा तोन फुलत दुइ-चरिके, ऊ संसार दिहब हम दाह ॥
 रात अन्हरिया कुलि बीतल बा, आइल पह फाटें के बेर ।
 काटा रछछन के मूंडी धरि, तिनको अब न लगावा देर ॥

[रामधनीसिंह आ जगरानी आके]

जगरानी [फौजी उरिदी देखि के आँख से खुसी भलका के]--
 मोर नाती देखते देखत केतना बढि गइल ।

रामधनी--बढ़ी ना एकइस बरिस के हो गइल ।

जगरानी--कवनु दरजा मिलल है, बबुआ ! अब कौनो बात मनो
 ना नु परै ?

रामधनी--लपटेन माई ! ई उरिदी लपटेन क हा ।

जगरानी--उरिदिया त निम्नन लागति-आ, मुदा ऊ सुनि के मन
 दुकैसन होत-आ ।

रामधनी--का सुनि के ?

जगरानी--कि हमार बबुआ बटुक लड़ाई में जइहें ।

बटुक—देस खातिर नु इयवा ! देसै खातिर बाबू कै बेर जेहल गइलें ।

जगरानी—ऊ गान्हीबाबा कै लड़ाई रहे, ओमें बरिस-छ महीना जेहल में रहि के लउटि आवे के रहे ।

रामधनी—हमहूँ इहै बात बेरि-बेरि समुभौनीं, बाकी आज काल के लइका हमनी के बात नानु सुनें माई !

बटुक—त बाबू ! चाहत वाडा, दुनिया ओहीं ले आ के गोड़ तोर-के बइठि जाय, जहाँ ले गान्हीजी तोहरा लोग के पहुँचौलें ?

रामधनी—गान्हीजी के संती के रहता निम्नन ह बटुक बेटा !

जगरानी—ओहि बखत जब बबुआ पहिले पहिल नून बनावे गइल, आ हम पुलस के लाल मुरैठा देखनीं, त गन्हियोजी के बात हमरा के जबूने लागल; बाकी इ नाती के रंग-ढंग देखि के बुभात-आ, गान्हिए जी के रहतवा निम्नन बा ।

बटुक—गान्हीजी के रहता ओही दिन कौनो काम के ना रहि गइल, जौना दिन गान्हीजी के चलन के हाथ से मजूरन-किसानन के गला रेटाइल ।

रामधनी—गला रेटाइल, कि किसान सहकि गइलन् । अब असामी बर-बेगारी, जरिबाना-सलामी किछुओ बात पूछत बाड़न् ?

बटुक—बाबू ! ज बर-बेगारी आ जरिबाने-सलामी लेवे के रहल, त. देस के नइयाँ ले-ले जेहलखाना काहे गइला ?

रामधनी—अइरेजन के हाथ से आपन राज लेवे खातिर ।

बटुक—आपन राज, कि जिमदरवन आ सेठवन के राज ! आ केकरा मद्दत से ? किसानन के मद्दत से गरीबन के मद्दत से ! आ फेनु ओकनियेसे बर-बेगारी आ जरिबाना-सलामी असूल करे के ?

रामधनी—ना जेहल गइल होतीं त डिस्टिकबोट के चेरमैन भइल होइतीं ?

जगरानी—चेरिमौने ना बबुआ ! होऊ जे लाट साहेब के का कहावेले ?

रामधनी—कोंसल माई !

जगरानी—ऊ नइखे माई बबुआ ! माई हम नु हवीं ? कोंसल कहा, ऊ कोंसल के जे बबुआ हमार लोमर भइल बाड़न्, उहौ एही जेह-लियै गइला से नु ! गान्ही जिउके रहता निम्मन रहल ह, बबुआ ! ओमें हेई लड़ाई में मूवे के ना नु रहल हा ।

बटुक—गान्ही के नाँव मति ले इयवा ! सुनि के जिउ जरत-आ जरमनवा जपनिया—दूनो रछछवा अनधन त लुटते बाड़ें, दस बरिस के लइकिनों के ईजत ना छाँडस् ।

जगरानी—ईजत लेलें बचवा !

बटुक—आ उप्पर से बाबूजी के गान्ही महतिमा कहत बाड़न्, कि मेहरारुन के ईजत बँचावे के काम मेहरारुन के नोह-हात पर छाड़ि देवै के चाही । इयवा ! तें ही बताव, हमरा जियला के धिरकार ना होई, जे केहू तोरा ओर हाथ बढ़ौलै, औ हम तोरा के हांत-नोह से काटै-बकोटै पर छाड़ि दीं ।

जगरानी (काँपि के)—एइसन राछछ बाड़न् ?

बटुक—पूछ बाबूजी से, ई रोजे खबर के कागद पढ़ैले ।

जगरानी—साँचै बेटा !

रामधनी—ई बात साँच हा माई ! मुदा—

जगरानी—तब त बेटा ! भाई-बहिनि के ईजत बचावे खातिर जिओ देहला में कौनो हरज नइखे ।

बटुक—जपनिया रछछवा हमरा देस के सिवाना पर चहुँपि गइल बा, हमनी के जा के सिवाने पर नु रोके के चाहीं, नाहीं त भइली में चहुँपि गइला पर किछु सँपरी ?

रामधनी—गान्हियो जी त संती से लडै के कहत बाडन् !

बटुक—बोलु तें ही इयवा ! राछछ संती-फंती के मनिहें ?

जगरानी—ना बबुआ ! ज संती से काम चलित त रामजी के ना औतारे लेवै के काम रहल, न रवना से लडइयै करे के ।

बटुक—एगो सीता के ईजत बँचावै खातिर त लंका ढाहै के परल, रामजी सीताजी के नानु कहि देहलें कि जाँय, ऊ रवनवा से हात-नोह चला के इज्जत बँचावसु ।

जगरानी—औ दरोपदी के खाली चीर खिंचला पर महभारत नधि गइल ?

बटुक—जपनिया जरमनवा राछछ ईजत ले के लरकोरी मेहरारुन के छाती से लागल बेटा के साथै संगीन खोभि के मुआवत बाडन् इयवा ?

जगरानी—दुध-पिउवा बच्चा के !

बटुक—औ एहि तरे लइका मेहरारुन के मुवा के ईजत ले के चाहत बाडन् अपना मुलुक के बनियन के राज चलावे ।

जगरानी—बनियन के राज !

बटुक—ई लडइयै बनियन के कारन भइल । बनिया के मतलब जात के बनिया ना इयवा ! हमरा देस में रजपुतौ, बाम्हनो सूद पर रुपया देत बाडें, दुकान-गोला खोलले बाडन्, कल-करखाना चला रहल बाडन् । एहि सब के बनिया कहल जाई । आजकाल एगो रूस के छाड़ि के समुच्चा दुनिया में बनिया-सेठन के राज बा ।

जगरानी—बनिया सेठन के राज !

बटुक—हाँ, इयवा ! हिनुतानो में गान्ही महतिमा अब ओही सेठवन के अंगुरी पर नाचत बाडन् ।

रामधनी—ई गलत बात ह माई !

बटुक—अच्छा इयवा ! तें ईमाने धरम से पूछ त, कि बंबई के

सेठ पांचे दिन में सात लाख रुपैया गान्हीजी के हाथ में दे देहलें कि ना ?

रामधनी—ऊ त दुसरा काम खातिर देहलें ।

बटुक—हम हूँ नइखीं कहत कि गान्हीजी के पेट में ऊ सात लाख जाई, ओनकरा बकरी के दूध-घिउ फर-फरहरी में जे रुपया-दू रुपया रोज लागैला, ओकर इतिजाम एगो बरधे के सेठ क सकैला । मुदा जे बेसी पूजा चढ़ावैला, ओकर महतिमौ लोग गीत गावैला कि ना इयवा ?

जगरानी—“सुर-नर-मुनि की ऐही रीती । स्वारथ लाइ करहिं सब प्रीती ।” बबुआ ! रमायन में हम आजै के पाठ में पढनी हं ।

रामधनी—गान्हीजी के स्वारथ नइखै माई !

जगरानी—बेटा ! सुर-नर-मुनि से बड़ि के जे तू गान्ही महतिमा के कहबा, त ई हम मानै के तयार नइखीं ।

बटुक—हाँ इयवा ! गान्हीजी हिनुतानों में बनियन के राज करावे चाहत बाड़न् ।

जगरानी—सुनतानी बबुआ ! गान्ही जिउ अपनेहू बनिये हवें ?

बटुक—जाति के बनिया के राज ना इयवा ! अरे जे केहू बनिया के काम करत-आ विल्लाइट-अमिरिका जरमनी-जपान के बनियन लेखा से बनिया । ऊ चाहत बाड़ें हिनुतानों में बनिया-राज कायम होउ । मुदा एही बनियन के राज खातिर पचीसे बरिस में दु-दुगो बड़का लड़ाई हो गइल; ओही लड़इया में नू हमार बाबा मुवलें ?

जगरानी (अर्खा में लोर भरि के)—रामधनी के उमिर रहलें बबुआ ! तोहार बाबा सुबेदार ।

बटुक—गाहक-औ-खदुकन के सरमेटे खातिर इयवा ! बनिया ओहि बेर लड़ाई कइले रहलन् । जरमनवा बनिया सब चाहत रहलन् दुनिया भर में हमार रोजगार-बात चले, ओही से ऊ लड़ाई भइल । पचीस बरिस बितला पर जरमन बनियन के पायक हिटलरवा फेनु ओही मतलब

से लड़ाई सुरु कइले । आ अबकी बेर ऊ बड़का राछछ बनि के आइल बा । गाँव के गाँव उजारत, लाखन मेहरारू-लइकन के मारत, जिल्लाके जिल्ला बरबाद कइल चाहत-आ । समुच्चा दुनिया के जीति के लोग के पसु लेखाँ बना के राखे चाहत-आ, जौना में फेनु केहू किछु बोलै लायक ना रहि जाय ।

रामधनी—अंगरेजो त हमनी के सुराज नइखे देत, फेनु हमनी काहे के लड़े जाई ?

बटुक—जरमनवा के छोट भाई जपनिया राछछ जौन हाड्-काड् के आधा सहर के बड़का-छोटका घर के रंडीखाना बना देहले, ऊ जप-निया जे भुइली में आ जाई, त हमार ईजत लूटी कि अंड्रेज के ?

जगरानी—भुइली में कहाँ एकोगो अंगरेजिन मेहरारू बा ?

बटुक—त इयवा ! पहिलका लड़ाई में गरीब के बेटा आपन समुभि के लड़ाई में ना गइल रहै, ऊ गइल रहै अपना बनिया-मलिकन के हंसेड़ी बनि के । हमनी हंसेड़ी बनि के नइखी जात इयवा ! हमनी जातानी एहि रछछवन के संहार करै, आ ओही साथे बनियन के राजो के संहार करे ।

जगरानी—त बबुआ ! सुराज के तेहूँ नु मानत बाड़े ?

बटुक—हाँ इयवा ! मुदा हमरा सुराज में भुइली में एको घर गरीब ना रहे पाई, केहू के लइका भूखा-लंगा न रहे पइहें । केहू मसलद पर बैठल-बैठल घिउ-मलीदा खा-खा मोटा के भइसा ना होये पाई; आ न केहू काम करत-करत सिटुकि के लकड़ी बनै पाई ।

जगरानी—त, तें एगो नइकी दुनिया वनावै चाहत बाड़े बबुआ !

बटुक—आजकाल के दुनिया के करोड़न जवान एही खातिर मूवै जात बाड़ें इयवा ! करोड़ में करोड़ों अदिमी न मु जा इहें । हमनी के इहै नेति बा ।

[परदा गिरत-आ]

अंक ३

[जगरानी के समने बटुक औ ओनकर मेहरारू सोना गावत बाड़ें]

सरग समान देस हमनी बनौली हाँ,

जहवा न केहु बा भिखारि, मोरि इयवा ।

सऊँसे मुलुकवा के एक घर कइ देलीं,

सब हवँ अपनै सवाड़, मोरि इयवा ॥ १ ॥

सरजू-नरैनी से नहरा बनौली हाँ,

गावँ गावँ पनिया पटावँ, मोरि० ।

खेते खेते हरवा चलत बा मोटरवा के,

कबहूँ न पडैला अकाल, मोरि० ॥ २ ॥

घरे घरे लइकी-लइकवा पढ़त बाड़ें,

केहु नाहिं मुख अजान, मोरि० ॥

गावँ गावँ नाटक-सिनेमवा चलत बाड़ें,

देखताड़ें लइका सयान, मोरि० ॥ ३ ॥

छोट बड़ जाति न धनिक ओ गरिब बाटें,

नाहिं केहु रजवा हमार, मोरि० ।

नाहिं जमिदरवा न केहु बनजरवा बा,

नाही बाटे सुदिया सवाई, मोरि इयवा ॥ ४ ॥

बटुक—बताव त इयवा ! पुरनकी दुनिया निम्मन रहे, कि नइकी ?

जगरानी—हमरा अंखिये देखत दुनिया कहाँ से कहाँ चलि गइल ? होऊ चमरौटी के पता नइखे ।

सोना—चमरौटी ना रहला के अपसोस त नइखे इयवा ?

जगरानी—अपसोस काह होई वछिया !

बटुक—आ नतोह बेकहल बा ?

जगरानी (उसास ले के)—अब अपसोस होले बच्चा ! साँच हम तोहरा मतारी के बड़ दुख देहनीं ।

बटुक—तें त अबौ उहै नु बाड़िस्, मुदा नतोहिया के त कब्बों गारी ना देलिस् ।

जगरानी—बुभात-आ हमहूँ ऊ नइखीं बबुआ ! हजार तरह के गारी हमरा जीभ पर रहे, मुदा अब बरिसन हो गइल, कौनो मुँह से निकरति-आ; कुलि भोर परल जाति-आ ।

सोना—इयवा ! मन पार के तें बोल, त तोर नतोह कुलि गारिन के लिखि घाली, आ इयवा-नतोह दूनों के नाँव से छाप दीहल जाई ।

जगरानी—ना बछिया ! लोग का कही ?

सोना—कही का ? ई कुलि गारी दस-पनरह बरिस में भुला जाई, फेनु एही कितबिये से नु लोग जानी कि पुरनकी दुनिया में कइसन-कइसन गारी चलत रहल हा ।

जगरानी—ना बेटी ! जगरानियो नू बदनाम हो जइहें ।

सोना—अच्छा त तोर नाँव ना रही, हम लिखि देब कि जहाँ-तहाँ से बहुत मेहनत से संगिरहा कइनी हाँ ।

जगरानी—जाये दा, बेटी ! का करबू ऊ कुलि गारी-फारी लिखि के ।

सोना—देखत ना बाड़े इयवा ! “सारन समचार” में रोजे एकाध गो पुरनकी कथा, वियाह-सादी के गीत छपैले ।

जगरानी—पढ़त बानी बिटिया ! आ दु-तीनि गो कथा हमहूँ लिखली नु है ।

सोना—आ इयवा ! देखले नु कथा के साथें तोर फोटवो छपल रहे ।

बटुक—बोलु इयवा ! पुरनकी दुनिया में लिखाड़िन में तोर नाँव होइत ?

जगरानी—लिखाड़ी ! जिनिगी भर रमायन पढ़त रहि गइनी, अच्छर लिखहू ना सिखले रहली । ई त नइकी दुनिया में जब अपनी बोली में केताप आ अखबार छापे लागल, तब नु हमरौ चाटक खुलल हा ?

बटुक—आ बोल इयवा ! हमरा अंडा खइले से तें डेराइल रहले ?

जगरानी—हाँ, बबुआ ! हम समुभक्त रहनीं. रजपुतवा जात से छाँट दीहें, फेनु नाती के बियाह कहाँ होई ।

सोना—त राजपुत के बेटी नानु मिलल इयवा ! आखिर कायथे-के बेटी सोनिया तोर नतोह भइल नु ?

जगरानी [सोना के गरे लगा के]—मोर बछिया रजपुत के बेटी से का कौनो कम बाडू । आ रजपुत के बेटी त कै गो तयार रहलीं, बबुवै नानु बियहलै ।

बटुक—रजपुत के बेटी ना बियहले से तोरा के अपसोस त नइखै इयवा !

जगरानी—सोना ऐसन नतोह नानु मिलित बबुआ !

बटुक—ई कहाँ अँचरा के खूँट धरती प राखि के तोरा के गोड़ लागे ले ? हमरा जाने में त इयवा ! ई नतोह निम्नन नइखै । कहू त एके घर से निकार बाहर करीं ?

जगरानी—हम हाथ में केताप लेहले खुरसी पर बइठल रहीले, त ओसे ई मति समुभा बबुआ ! कि हमार आँख अपना चारों ओर देखत नइखै । पुरनकी दुनिया में मेहरारू मरद के गोड़ के पनही समुभल जाति रहै, आ तुलसियो बाबा लिखि देहलन् “ढोल गँवार सूद्र पसु नारी । ए सब ताड़न के अधिकारी” ॥

बटुक—त इयवा ! तोरा ताड़न मिलल रहे ?

जगरानी—तोहरा बाबा सूबेदार के कुलि जिनगी त पलटनियें में बीति गइल, कबहूँ दु-तीनि बरिस पर दू-एक महिन्ना के छुट्टी आवस् ।

सोना—त इयवा ! तें अकेले घर अगोरत रहलिस ? बटुक एइसन करें, त हम त पचास बेर एनके कान धैके उठाई बैठाई ।

जगरानी—ई कान धैके उठावल-बैठावल मरदै के हाथ में रहै बेटी ! मुदा सूबेदार कबों हमरा देह पर हाथ न छोड़लें ।

बटुक—जानत बाड़े इयवा ! काहे पहिले के मरद मेहरारू के देहि पर हाथ छोड़ि सकत रहें, आ आज तोर नाती बटुक सोनिया के हरूस बचनौ ना बोलि सकैला ।

जगरानी—कहु बेटा !

बटुक—सोनिया त आजिकाल भुइली के पंचाइत के सरपंच नु हा ; जब सरपंच ना रहै, तबो पनरह सै रुपया साल के मेहनत करत रहे ; मोटरवा के हर जोते में ई समुच्चा सारन में मीर भइल रहै ; आ हम कमातानी बारह सै रुपया ।

जगरानी—छ सौ रुपया त हमरौ खिस्सा-कहानी लिखला में “सारन-समचार” से मिलि जाला ।

सोना—इयवा ! तें आपन जिनिगी के हाल एगो केताप में लिखि घलती, त निम्नन होइत । तोरा कलम में बड़ जोर बा ।

जगरानी—हमरा बुभात रहे बेटी ! कि गारियें में हम गाँव भर में फरकोर रहबि । नइकी गारी बना-बना के देवें में हमार हब्बास बड़ खुलल रहै ।

सोना—उहे गारी के हब्बास अब कलम में नु खुलल हा । इयवा ! तोर बूढ़ अदिमी के लिखहू में नु तकलीफ होले । हमार मन करत-आ, तें बोलु आ हम लिखत जाई ।

जगरानी—तोहरा बेटी ! गाँव के इतिजामे से कहाँ छुट्टी मिलति-आ ।

सोना—त बटुक के कहू इयवा ! ई लिखिहें ।

जगरानी—सोचतानी बेटी ! पहिले एइसन जे घरे-घरे चूल्हा फुंकात, त आठ-नौ घरी त तोहार चुल्हियै तर बइठलै बिति जाइत, फेनु ई गाँव के काम, ई लिखल-पढ़ल कइसे होइत ?

बटुक—इयवा ! तेंही नु बागी भइलिस, जब पहिले-पहिल गाँव भर के चूल्ह एक कइल् गइल् ।

जगरानी—हम ही ना बबुआ ! दस गोड़ी औरिउ रइनीं । आ तीन गो बाबा जिउ लोग रहे ।

बटुक—त हमनी जबरजस्ती नानु कइली ? छोड़ि देहलीं, कहनी—
दा एहि पगलिन के कोरवरै सीधा, आपन बनावे खाँय ।

जगरानी—अ दुइये महिन्ना में कुलि चिरई फुरं से उडि गइलीं ।

सोना—औ तें अकेले चूल्हा फुंकात रहि गइले नु इयवा !

जगरानी—हम सबकरा से पाछे चूल्हा छोड़नी बेटी । इहे मुढताई ।

[गाँव पंचाइत के पंच सारी-जूता पहिरलें तीनगो मेहरारू आ अर्धबहिया कुरता जंघिया जूता में दुगो मरद आवत देखइलें ।]

जगरानी—बेटा ! अब हम जातानी तोहरा लोगन के पंचइती के काम होई ।

[जगरानी चलि गइलीं, पाँचो पंच चहुँपि गइलन् ।]

बटुक—[हाथ बढ़ावत] सुन्नर साँभ सब साथिन के ।

सब—सुन्नर साँभ साथी बटुक के, सुन्नर साँभ साथी सोना के ।

[सबै हाथ मिलावल]

सुकुरुल्ला—ईया त ना नु रहली हाँ, बटुक भइया !

सोना—तें वड़ चुल्ली हवे सुकुरुआ ! इयवा के वड़ हैरान करैले ।

सुकुरुल्ला—ना सोनिया मोर सोने के भौजी ! उहे अतवार के ज हमनी सब लइका अंडा उसिन के खाई, उहै बतिया । मुदा बटुक

भइयवा जे इयवा के चरनाइमिरित पियौले, ऊ सुनि के त हँसत-हँसत हमनी के पेट फाटै लागल । आ सुगिया त औरो सुनि के लोट-पोट हो जाले ।

सुगिया—हमही ना सुकुरु देवर ! बतुलिया के ना देखला ।

बतुलिया—आ महदेइया बहिन त कहत रहे, आजो जे इयवा ओइसे पूजा-पखंड करित, त हमनियों के मोका मिलित ।

महदेई—सुखारी भसुर से पूछ, बतुलिया बहिन !

सुखारी—महदेई ! दुनिया भर तोहार देवर, आ हमही अभागा भसुर बनै के बानी ।

महदेई—एगो भसुरो नु चाहेला ?

सुखारी—मुदा, ना हम हरखुयै महतो से उमिर में बड़, न तोहरै से, फेनु भसुर कइसे ?

महदेई—इमान से कहतानी सुखारी भसुर ! सुगिया आ बतुलिया गवाही दी हैं, चिट्ठी डरला में तोहरै नाँवू परि गइल, हम का करीं ?

सुखारी—हमहूँ चिट्ठी डरले रहलीं, त भौजाई में महदेई के नाँव निकसल ।

महदेई—जेकरा गाँव भर भौजाई सेकरा चिट्ठी डरला के कवन काम ? तूँ हमार भसुर हवा । ओ देखा पुरखन के चाल छाड़ै के ना, तनी हमरा से देहि ना छुवावै के । नाहीं त भसुर आ भवेह दूनो के नरकों में ठेकाना ना मिली । अच्छा चला बइठा खुरसी पर भसुर जी ! अब पंचाइत के काम होई । सोना सरपंच के आँखि लाल-लाल भइल बा ।

[सब लोग बइठि के]

सोना—मंतिरी सुकुरुल्ला पहिले पुरनकी बइठकी के लेखा सुनइ-हैं । आ आजि की बइठकी में जिल्ला-पंचाइत के पंच साथी बटुको के काम हवै, एहि वासते उनहूँ के रहै के कहल जात-आ ।

मुकुल्ला—पहिला बइठकी में बहुत कहाइल ना रहै, हाँ, एहि बीच में पंचाइत के हुकुम पर कवन-कवन काम तमील भइल, कवन-कवन हो रहल बा, ऊ सुनावै के बा । धुरदहताल से भुइली के रसोईघर में एक मन दस सेर मछरी रोजिन्ना आवत रहल हा, अब पंचाइत के हुकुम से दु मन बीस सेर क दीहल गइल । बइसाख के महिष्ठा आइल, अब मछरी दूना निकारि के चिट्टा के मोताबिक गांवे-गांवे भेजल जाति-आ ।

महदेई—मुदा सरपंच सोना ! दयालपुर आ सेनुआर क रसो-इया लोग सिकाइत करत-आ, कि मछरी हमनी किहाँ अबेर से चहुँपति-आ, गमकि-ओ जाति-आ ।

मुकुल्ला—साथिन महदेई के कहल ठीक ह । मुदा अब ऊ सिका-इत ना होये पाई । हमनी के पास लोरी कम रहलि ह, परसों सांभि के बीसि गो नइकी लोरी सारन सहर से चहुँपि गइली । दिन भर के फँसावल मछरी ए गो बड़का जालीदार थइला में पानिये में राखल जात बाड़ीं, आ पहर भर रातै से लोरी छूटे लागत बाड़ीं ।

सुगिया—एकर मतलब भइल, कि सुरज उगत-उगत मछरी सब जगह चहुँपि जाति-आ ।

मुकुल्ला—हाँ ।

सुखारी—आ फसिल कइसन बा साथी मंतिरी !

मुकुल्ला—हमरा जवार में गोहूँ सड़तर-पडतड़र चालिस मने बिगहा भइल हा । भुइली में त खाली मछरी आ साग-भाजी के कार-वार बा । आलू के हिसाब त साथी सब जनते बाड़ें । पियाज खूब निम्मन लागल बा, सौ मने बिगहा जाये के उमेद बा । आलू खनते, कलकतिया खाद दियाइल हा ।

बतुलिया—आ ककरी खरबुज्जा ?

मुकुल्ला—ककरी, खरबुज्जा, लौकी, कोहड़ा, करैला औ दूसरो

फल तरकारी बड़ निम्नन बा । खरबुज्जा के बीया लखनऊ से मँगावल गइल ह । मालुम होत-आ कवनो पानी के फेर बा, अपने इहाँ के जनमल ओही खरबुज्जा के बीया से ओतना मीठ खरबुज्जा ना होखे । हमरा साथी कमकर, कमकरिन लोग बड़ा मुहतैदी से काम करत-आ । दलपति सिटहल राउत, मूंगा के टोली के काम के बहुत सराहना करत बाड़ें ।

बतुलिया—मूंगा बहिन के टोली तीस-मने कट्टा आलू उपरजलै, ई साथी लोग के मालुम बा ।

सुखारी—ओ मूंगिया कहत रहल, कि हमनी के पियाजो दस मन कट्टा उपराजब ।

सुकुल्ला—अउरि त कुल बात हो गइल, एगो बड़की बात पर हमनी के राय करै के बा । भुइली, एकमा, हंसराजपुर, आमडाडी, ओगरह दस गो गाँवन के बसगित के एक जगह बसावै के बात सारन से पुछाइल बा । दसो गाँव एपर विचार करत-आ । हमनिओ के एहि बतिया के फँसला त गाँव भर से लेवे के परी, बाकी एहि पंचाइतो के आपन राय कौनो निहिचय कर के चाही ।

सुगिया—हमरा से जेकरै से बात भइल बा, ओमे केहु केहु बूढ़ लोग कहत-आ कि पुरखन के डिह छोड़ल निम्नन नइखै । बाकी त सब लोग के कहतब इहै बा कि एक जगह बसिगित बसि जायेब निम्नन ह । बिजली त.तार पर बा, एहि वासते भुइली में का धुरदह के चँवर तक में मछरी मारै खातिर लागि गइल बा । मुदा पानी के नल एक जगह से दस गाँवन में ले गइला में लोहा के पंप बहुत लागी । एक जगह दसो गाँवन के बसि गइला से ओकर खरच बहुत कम होई । हमनी के नहानघर में नल के लागल बहुत जरूरी बा ।

सुखारी—आ पैखानो के अब अदिमी से ढोआवै के काम नइखै, उहो नल से हो सकैला, आ गाँवे-गाँवे नल लगौला में बहुत खरच होई ।

सोना—इसकूल, असपताल नाटकघर सब बातें के इतिजाम अच्छा होई । बटुक साथी ! सारन में हमनी के वड़का पंचाइत के का राय बा ?

बटुक—सिवान-गोपालगंज की ओर आधा जिल्ला से बेसी में बड़का बड़का गाँव बसि गइलें ।

मुखारी—हमहूँ हथुआ की ओर देखनीं, मार उज्जर उज्जर पक्का घर रात के बिजुली से जगमगात, चारो ओर साफ-सुत्थर, हरियर-हरियर बगइचा, दूब-बिछावल खैले के मैदान देखि के मन खुस हो जाला ।

सुगिया—हम समुभ्तानी, समुच्चा बसती के नाव लेनिनपुर और मोहल्ला के नाँव भुइली, एकमा हंसराजपुर. . . . राखि देहला में बुढवौ लोग के मन रहि जाई ।

बतुलिया—इहै राय हमरो बा ।

सब—हमनी सब के इहै राय बा ।

सोना—त इहे राय पास । आज के बइठक के काम खतम भइल ।

[सब लोग चलि जात-आ]

अंक ४

[जगरानी, रामदेवसिंह, बिसुनदेव परसाद और रमेसर तिवारी चारों बूढ़ एगो गाछ के छेहरा खुरसीपर मेचके समने बइठि के चाय पी रहल बाड़न् ।]

जगरानी—हमनी के पुरनकी दुनिया से लइकन के ई नइकी दुनिया कइसन् निम्मन बा रामदेव बाबू !

रामदेव—का निम्मन बा ? एकनी के बोलहू के लूर नइखै । छोट-बड़ किछुओ ना जाने, सब के 'साथी' 'साथी' कहलें । एनकरा

खातिर सबे धन बाईस पसेरी । होऊ न देखा सुखरिया चमरा के, ऊ लेनिनपुर के मालिक बनल बा !

जगरानी—मालिक नइखे रामदेव बाबू ! सरपंच हवें ।

रामदेव—उहै एकै बाति हा । पचास पुहुति से हमार खनदान परसा में राज करत चलि आइल । हमरा के लोग कहत रहै, बाबू राम-देव परसाद नरायन सिंह । जब गढ़ से निकसत रहनी, त बीस गो मोसा-हिव, आ पट्टा जवान पाछे-पाछे चलै । परसा के ऊ बाजार कहाँ बा, अब त कुलि पंचइतिया अपना हाथ में ले लेहलस ।

जगरानी—मुदा पहिले परसा में रोजिन्ना पंच-पंच सै रुपया के सेब-अंगूर ना नु बिकत रहे । आज देखी नु पंचमहला मकान में कै सै तरह के चीज सजाय के राखल बा । मोलौ भाव करै के काम नइखे, दाम लिखि के कागज साटल बा ।

रामदेव—ई सेब-अंगूर चमार-सियार के मुंह में जाये लायक हा ? हमनी के राज में साँवा-मंडुवा आध पेट मिलत रहल, आ अब देखा उहै सुखरिया चमार लेनिनपुर के—नाही हमनी पुरतकै नाँव राखल जाई एकमा-भुइली के—मालिक भइल बा ।

[यही बखत सरपंच मुखारी, सोना, बतुलिया, तीनि गो अउरी मेहरारू-मरद के साथे कान्हे पर फरुहा रखले समने से निकरलें । मेहरारू-रुनो के पोसाक जूता, जंधिया, अधबहियाँ-कुरता औ कपारे पर घाम रोकैवाला टोप मरद जइसन बा । रामदेवसिंह पहिलेइ उठि के खड़ा भइ गइलें । मुखारी टोप के दहिना हाथ से उठा के हँसतै बोललें]

मुखारी—सब बूढ़ा साथी लोगन के सुन्नर सबेर । [फेनु ऊ लोग आपुस में किछु बतियवतै चलि गइल ।]

रामदेव (बइठि के मुंह बिचुका के)—देखा नु जगरानी बहिन ! तू हऊ भुइली के निकुम्ह रजपुत, आ हम एकसरिया भुइहार कुल भुइहा-

रन में सिरताज, से ई चमार-सियार, जोलहा-धुनिहा के सामने खड़ा होखे के पड़त-आ ?

जगरानी—ऊ जबरजस्ती नइखे नू करत ? बाकी देखतानी राम-देव बाबू ! अपने हमनियों से पहिले ठाढ हो गइनीं ?

रामदेव—जौना बखत हमार मोटर परसा बजार से निकरै, त कुलि बनिया-बकाल ठाढ हो करिहांव दोहरि के सलाम करै; सेही रामदेव-सिंह के सुखरिया के सलाम करे के परत-आ ।

जगरानी—ना करीं त सजाय ना नु करी ?

रामदेव—उपहास करे लगिहै बहिन ! एक दिन परसा में हमरै भेख बना के मोटर पर निकरले रहें, आ परसाके आजकल के इ बड़की पकिया सड़क पर खड़ा हो के भुईं ले हाथ चहुँपा चहुँपा के 'सलाम सरकार' कहि-कहि हमरा नाँव पर हसत रहलें । का करीं, खून के घोंट पी के रहि गइनीं । ना भइल पुरनका दिन, नाही त हलखोरसिङ्वा से पकड़ि मँगवा के गढ़ पर धुरछक उतरवा देती ।

जगरानी—त रामदेव बाबू ! अपना के ई नइकी दुनिया निम्मन नइखै लागत ? अपने चाहतानी कि ओहीतरे लोग करिहांव दोहरा के सलाम करौ, ओही तरे लोग आध पेट मँडुवा-कोदो पर गुजर करौ, आ सेब-अंगूर ना खाव; ओही तरे हाड़-हाड़ निकरल लइका लंगा फिरें ?

रामदेव—चारि जुग से बड़का-छोटका चलि आइल ह, पाँचो अँगुरी बरोबर ना होले । कहा बिमुनदेव बाबू !

बिमुनदेव—साँचे कहतानी सरकार ! हमरा रसूलपुर के कायथ आ परसा के बाबू ई राजा देवान के नाता चारों जुग से चलि आइल बा । हमनी के ऊ अपनी जिनगी भर निबाहै के बा ।

जगरानी—आ हई अपना नातिन सोनिया के फरहा कान्ह पर ध के चलत नइखै देखत ?

बिसुन—पगरी उतारि लेहले जगरानी बहिन ! तुंहही बतावा ई निम्नन बा ?

जगरानी—कायथ के ब्रेटी राजपुतिन के पतोह होय, ई निम्नन बा ?

बिसुन—इहौ अनेति हा, मुदा का कइल जाव, इनरवै में भांगि घोरा गइल बा, दुनियवै नु बौरा गइल बा !

रमेसर तिवारी—वरेजा में हमरै घर भर—बलुक कही हमरै देहि भर—नेति रखले बा । पुरिखा रामजी के मंदिर वना गइल रहलै, से दूनों साँभ जा के हम पूजा करीले, आ रामजी से विनईले कि हे भगवान् ! कहिया अकलंकी औतार लेवा ?

जगरानी—तिवारीजी ! हमरा नतिया बटुकवा के जानैला नु ?

रमेसर—तोहरा नतिया के के ना जानी, उहै नू कपतानी छाड़ि के एहि जवार में ई कुलि खुरफात रचलस्, आ पहिले दुसरा जाति में बियाह कइले । बिसुन बाबू ! नराज मति होइहा ।

बिसुन—हमार चलल होत त तिवारी जी ! एहि छौंड़ी के दीदा रहल बियाह करै के ? आ देखत नइखीं हमरै समने जंघिया पहिरले टोप लगौले चलल जातिआ, देखि के बोलति—आ “सुन्नर सवेर” जनुक एनकरा ना कहलासे सवेर सुन्नर ना होई ।

जगरानी—अरे बिसुन बाबू ! चीन, जापान, रूस, बिल्लाइट, अमिरिका सबे जगह “सुन्नर सवेर”, “सुन्नर दुपहर”, “सुन्नर सांभि”, “सुन्नर रात”, “सुन्नर दिन” कहल जाला, ओही से हमनियो के लइका कहत बाड़ें, एमें बाउर का बा ?

रामदेव—जगरानी बहिन ! तू हमनी बूढ़न में सब से वड़, बाकी तू लइकन के पछ लेलू, ई काहे ?

जगरानी—नइकी दुनिया में लोग के हम बेसी सुखी देखतानी ।

देखीं, हमरा समुच्चा सारन जिल्ला में केहू भूखा-भिखमंगा लौकत-आ ? आ खाये के बताई, लेनिनपुर, परसा, भै कौनौ गाँव के रसोईघर में जा के देखीं, एतना निम्नन भोजन अपनेहूँ के जेवनार में बनत रहल हा ?

बिसुनदेव—हमनी के जिमदारी, मोलहू साहु के रोजगार आ चाउर के मील इहँ कुलि छीनि-भपटि के नु ई छप्पन परकाल बन रहल बा !

जगरानी—खाली ओतने से गाँव भर छप्पन परकाल ना खाइत बाबू ! देखत नइखी होऊ बिसुन बाबू के नातिन सोनिया कान्हे फरहा लेके जाति बिया । ई जे समुच्चा मरद-मेहरारू जाँगर चलावत-आ ओही से ई छप्पन परकाल बनत-आ ।

बिसुनदेव—हमरा नातिन के नाँव मति ला जगरानी बहिन ! हम मनावतानी भगवान् से कि अब हेई कुलि मति देखावा ।

रमेसर तिवारी—साँचै कहत बानी बिसुन बाबू ! हमरा गाँव में त गिरीस के घर बहि गइल । ओनकरा नतोहन में कौनिउ जाति नइखै बंचल । हमनी के घरे मेहरारू के ईजत रहलि हा ।

बिसुनदेव—खवास-खवासिन छोड़ि केहू परछाई ले ना देखि सकत रहल हा, से देखी हई कसबी-पतुरिया लेखा मुँह खोलले घूमति बाडीं । माँभी से सारनले ई रेल के संडक का बनति-आ, एहि लोग के रूप के बजार लगावै के मोका मिलि गइल हा ।

जगरानी—एइसन मति कहीं देवान जी ! हमनिये के नु बेंटी पतोह बाडीं । अपने सब नहकै पुरनका दिन के भंखत बानीं । ऊ अब फेनु लउटि के न आई । देखतानी, हमनी के जमाना में एक घर के दस घर दस घर के चालिस घर बँटातै जात रहल हा, आ अब देखी समुच्चा देस एक घर बनि गइल । मेहरारू मरद सब ओही एक घर के सवाँग हवै । जे काम करै लायक बाटे, सेके देंह चोरावै ना दीहल जात-आ । जे देहि से बेकाम बा, सेकरा के खाये-पीये, पहिरे-ओढ़े के इतिजाम देस

करत-आ । लइका लइकिन के पोसे-पालै, पढ़ावै-लिखावे के एइसन सुन्नर इतिजाम कौनो जुग में रहल हा ? हमरा त देखि के आँखिया पतियाय ना, कि एही छपरा जिलवा के धरतिया में एतना अन-धन कहँवा लुकावल रहें । हमनी पुरनकी दुनिया के अदिमिन के ई सरग एइसन नइकी दुनिया के देखि के खुस होये के चाही ।

[एही बखत मरद मेहरारू फरुहा लेहले गावत अइलन ।]

उठु-उठु रे तें मुखबन्हुआ, उठु रे धरती के अभगवा ।

बा न्याय बजर घहरावत, जनमत बढ़िया संसरवा ॥१॥

पुरुबिल फेनु नाहीं बाहीं, उठु रे अब-नाहि तें बन्हुआ ।

नइ नैव उठत बा जगवा, ना रहलें अब सब होइबे ॥२॥

आ जुटहु संघतिया समुहे, ई आखिरि बेर लड़इया ।

[परदा गिरि जात-आ ।]

जोंक

ई नाटक जूलाई ११, १२ तरीख (१९४२) के हजारीबाग जेहल में लिखल गइल ।

नाटकके खेलाड़ी

१—नोहर राउत	मुखिया खेलाड़ी
२—बुभादन महतो	किसान
३—सिरतन लाल	जिमदारके पटवारी
४—ढोंढामल	मिल मालिक
५—भाकुरचंद	दुकानदार
६—लादूचंद	भाकुरके बेटा
७—दुब्बर साहु	महाजन
८—रमजान	मजूर
९—गोपाल गिरि	संन्यासी साधू
१०—रामदास	वैरागी साधू
११—भगतिन	बिधदा बाभनी
१२—पंडित	पंडित
१३—मंसीजी	मुनीम
१४—रंगसिंह	जिमदार
१५—लोटन साहु	महाजन
१६—नोकर	नोकर
१७—अंग्रेज सिपाही	सिपाही
१८—खेलावन	सिपाही
१९—हिनुतानी	सिपाही

जोंक

(गीत गावल जाति-आ)

हे फिकिरिया मरलस् जान ।

सांभ बिहानके खरची नइखे, मेहरी मारें तान ॥

अन्न बिना मोर लइका रोवें, का करिं हे भगवान् ॥हे०॥

करजा काढ़ि काढ़ि खेती कइलीं, खेतवें सूखल धान ॥

बैल बेंचि जिमदरवा के देलीं, सहुआ कहै बेइमान ॥

[बुभावन महतो एगो फाटल-मइल धोती पहिरले खड़ा बाड़ें । एही घरी नोहर राउत के आँखि बुभावन महतो की फिल्ली पर पड़ल, ऊ भट से फिल्ली से कौनो चीजु नोच के बुभावन से कहलें]

नोहर—हई देखा बुभावन महतो !

बुभावन—(थथमि के) नोहर भाई ! फेंकऽ होने, फेंकबो करवा, हमरा पंजरा जनि लेआवा, का दु करिया-करिया हिल्लत-आ ।

नोहर—तोहरे फिल्ली में से निकलनी हाँ, देख नु हई गोड़ लोहू-लाहान भइल बा । ना जानी केतना बेरि से लागल रहल हा !

बुभावन—(खून से समुच्चा फिल्ली के भीजल देखिके) जोंक लागल रहल हा, नोहर भाई ! हमार माथा घूमत-आ । (बइठि गइलें)

नोहर—(बइठि के घाव के मुंह अँगुरी से दाब के) भइंसवा जोंक हा बुभावन ! आपन मतलब क चुकल वा । हो देखऽ नु अउँठा कइसन मोट बा ।

बुभावन—ओकरा ओर देखे के मन नइखे करत । पाव भर खून पियले होई नोहर भाई ?

नोहर—ना, पावभर ना, पाव भर बहुत होला, मुदा कनवाछटांक से का कम होई । केतना त खून बहि गइल हा । तोहरा मालूम ना भइल ह बुभावन ?

बुभावन—जोंकि के लागल ना नु मालुम होखे । हम पोखरा में भइंसिया के धोवली हाँ, मिगडाह नु तपल बा, रोहिनी के पानी बरिसि गइल बा, से पोखरवा में नयका पानी बहुत बा, नयका पनिया में ना जाने कहाँ से छेंटी के छेंटी जोंक उप्पर भइल बाडीसन् !

नोहर—तोहरा तनिको ना बुभाइल हा ?

बुभावन—ना नोहर भाई ! हम अपना भइंसिया के ढोंडी से चारिगो जोंक निकारि के बिगले रहली हँ, बाकी हमरा ई ना पता रहल है, कि हमरो जोंक लागल बा ।

नोहर—अदिमी के खून मिठ होला बुभावन ! ऊ एक कनवा पी के मोटाइल बा । हम फेंकि देनी, देखा इतना पिअले बा, कि मुंह से खून निकरि रहल बा । मुदा पाकी ना, लोग कहेला जोंकि के काटल घाव पाके ना ।

बुभावन—साचे नोहर भाई ! नाहीं त हमार भइंसिया त सरि के मुइ गइल रहित, रोजे ओकरा देहिं से चार गो पाँच गो बीगीले ! भगवान् एनी के काहे के बनौलै ?

नोहर—हमनी के देहिं में जम्मा-पूँजी नवै सेर खून बतावल जाला ।

बुभावन—त एकै कनवा निकरला से कपार में घुमरी काहे आवेले नोहर भाई ?

नोहर—घुमरियै के पृछत बाड़ा, बेसी खून गिरि गइला पर अदिमी

मरि जाला । गोड के मोटकी नस काटि दा, जे खून ना बन्न होई, त अदिमी मर जाई । दुइ मन के समुच्चा देहि में उहै नौ सेर खून फइलल बा ।

बुभावन—छोड़ दा नोहर भाई, अब बन्न हो गइल होई ।

नोहर—[हाथ हटा के] हाँ खून बन्न हो गइल ।

बुभावन—[उठि के जोंक पर हुमचि-हुमचि के पाँच-छ एड़ी मार के] नोहर भाई ! देखा केतना खून बहत आ, इ जोंकिया सुटुकि के पातर हो गइल, बाकी मूअल ना ।

नोहर—जोंकि के जिउ बड़ा कठकरेजी होला ! बुभावन । ऊ जलदी ना नु मृवै ।

बुभावन—हाँ, नोहर भाई ! लोग त कहेला कि सुखा के पीस के फेंक दीहल जाय, तबहूँ बरखा के पानी बरसतें जोंक फेनु जी जाले ।

नोहर—ई हमरा नइखे मालुम, बाकी जोंकि बड़ कठकरेजी होले, ई देखतै बाड़ा ।

[गाँव के पटवारी सिरतन लाल टोपी-भिरजई पहिरले, कान में कलम खोंसले अइलें ।]

बुभावन—सलाम देवान जी ! कहाँ घुमतानी ।

सिरतन लाल—मालिक के दु मन धिउ, पाँच मन दही, दु गाड़ी कटहर केतना कुली दे के अबगे विदा कइनी हाँ, तीन दिन से परसान-परसान रहनी हाँ, बुभावन महतो ! आज इहै जाके साँस लेहनी हाँ ।

बुभावन—देवान जी ! ई पंच-पंच मन दही, दु-दु गाड़ी कटहर, एगो खस्सी हमहूँ देहनी हाँ, फेनु सुनतानी गाँव से वारह गो खस्सी अउर गइल हा, मालिक के छगो परानी ई कुलि ले के का करिहें ?

सिरतन—तुहूँ नोनिये भूचेंग रहि गइला ! बड़का लोग के अपनै देह ले नानु होखे । एक अदिमी के पाछे पचास गो जियैला; तौनो में ई त बबुई जी के वियाह के सरजाम नु हवे ?

बुभावन—एगो बरात के सरजाम त हमरै गाँव से गइल हा, फेनु हमनी के मालिक के छप्पन गो मौजा बाटे, ई कुल्ह रखहू के जगह त ना होई ?

सिरतन—राखँ के कौन बात लेले बाड़ा, देखले नइखे, भंडारघर केतना बड़ बा ? भंडारी के हाथ में चाभी के भड्वा नइख देखले ? फेनु सरकार संतोखी साह के गोला खाली करा देले बाड़ें ।

नोहर—हाँ, जब गाँव भर के घर खाली करा दीहल जाय, त छप्पन मौजा का छसै मौजा के चीज-वतुस राखल जा सकैले ।

सिरतन—बुभावन महतो ! अबकी चला नु तुही, का केहू सवांग के भेजबा मरदे ! उहां दुसै ले त नोनियै जुटिहें ।

नोहर—भुइहार बाबू के घरे बरात आई; औ ई दु सै नोनिया जुटि के का करिहै ?

सिरतन—फरुहा-कुदार के बहुत काम रहैला नोहर ! बबुआजी के बियाह भइल रहल, त गइल न रहला ?

नोहर—ना देवान जी ! सुनी ले खाये बिना गति बनि जाले, एही से ना जाई ।

सिरतन—खाये के तकलीफ न होले, हमरा त नइखे भइल ।

बुभावन—अपने के का होई, अपने के त बहनोईये बाड़ें दरबार में . . . बाकी देवान जी ! एक ओर से लूट लागल बा । अदिमी बर-बेगारी में अपना कपारे चीज-वतुस लादि के दस कोस पहुँचावे जाला । मर-मजूरी त का मिली, अपना घर से सतुआ वान्हि के जाईले, इहो ना होला कि हमनी के जुरतै छुट्टी मिल जाओ; चारि दिन चिट्टियै पुरुजा देवे में लगा देलें ।

सिरतन—एमें सरकार के कौनो दोस नइखें बुभावन महतो ! दरबार में अइसही चलेला । एगो सरकार के पाछे हज्जार गो अदिमी जीयेलें । बड़का के इहे नु ह ?

नोहर—आठ आना रुपया महीना जब तनखाह दिआई, त अदिमी का करी देवान जी ! ई त मालिक के नु सोचे के चाही कि रुपया-आठि आना महिन्ना में हरवाहो-चरवाह आजकालके दिन में ना मिली ।

बुभावन—तीन ढेबुआ सेर त मंडुआ बा नोहर भाई ! औ ढेबुआ सेर महुआ ।

नोहर—मंडुओ-महुआ से गुजारा करे त खाली खोराकी में एक अदिमी का डेढ़ रुपया महिन्ना लग जाई, आपन कपड़ा-लत्ता आ मेहरारू-लइका के पोसे के त बातें फरका ? मालिक ई नइखें देखत ?

सिरतन—सनातन से दरबार में जेकर जेतना नोकरी लाग गइल बा, उहै चल जाति-आ । देखत नइखें, हमार तनखाह पचीस रुपया साल हवे, दु रुपया के महिन्ना ।

नोहर—मुदा देवान जी ! अपने महरौली के बारह टोला के राजा बनि के बैठल बानी । छ हजार के तहसील में रुपया पीछे दु पैसा केतना होला ?

बुभावन—औ खाये-पीये में एको पैसा खरच ना होखे के, घर भर के काम एहीं से चलैला ।

सिरतन—अब का अमदनी बा बुभावन महतो ! हमरा बाबूजी के बखत देखता, एही महरौली में सोना बरसत रहल हा ।

नोहर—महरौली में सोना अबहियों बरसत-आ देवान जी ! बाकी हमनी खातिर ना पाँच हजार के तहसील अब छ हजार हो गइल । दु-दु पुहुत के जोतल खेत मालिक निकसि के जिरात बना लेहलें, दुसै विगहा जिरात कबहीं रहलह देवान जी ! ई हमनी का मुँहे जाब लगावल हा नू ?

बुभावन—आ, सुनतानी मोटरवाला हर आवत-आ, जौनो गाँव के चमार हरवाहा दु महिन्ना जीअत रहले हाँ, उहो बन्न भइल, ओ-कनी के मुँह के अन्न छूटल ।

सिरतन—बकास के भगड़ा जिला-जवार में ना उठल होइत, त ना नु निकलतें ? सरकार के एमे कौनो खसूर नइखे ।

नोहर—ए देवान जी ! देखत-देखत आँख पाकि गइल । जान पड़त्-आ कि महरौली में जेकर जनम-करम बा, जेकरा हजार पुहुत के हाड़ इहाँ गलि गइल, से किछुओ ना । औ दस कोस लमहरा ई अमहरा के बाबू साहेबै महरौली के सब कुछ बाड़ें ।

सिरतन—नोहर राउत ! तोहार सिकाइत कई बेर हमरा कच-हरी में चहुँपल ह, मोहित राउत के खियाल आवत-आ, नाहीं त जानत नु बाड़ा जिमदारी फन्ना ।

नोहर—देवान जी ! बाबू के खियाल मति करीं, जिनगी भर एगो भइंसि के उठौना बे पैसा के लगौले रहलें, आ, ओही से नु अपने के छोह बनल रहल हा ।

सिरतन—मालिक के जमीन में बसल बाड़ा, उनकरा निगाह से जीयत-खात बड़ा, सेंतिहे नानु दही-दूध देला ?

नोहर—ए देवान जी ! बघउछ बाबा के चौरा अबहिन ले हमरा इहाँ हर साले पुजाला । महरौली कुल्ह जंगल रहै, जब हमनी के पुरुखा अइलें । हमार, बुभावन आ अउर लोग के पुरुखा जंगल काट के खेत-बारी बनौलें; बघउछ बाबा लेखाँ कतना लोग के बाघ मुअवलस् घर के केतना बच्चन के हुँडार उठा ले गइल ।

बुभावन—हुँडरहो त हाँ खनी हमरा दादा के होस तक होत रहल हा, नोहर भाई ।

नोहर—आ खेत बनावै में केतना अदिमी साँप के कटला से मु गइलें, तब महरौली गाँव बसल, तब महरौली में सोना बरिसे लागल, तब ओही सोना के लूटे खातिर अमहरा के बाबू चहुँपले । अमहरा के बाबू के एको बुध्न पसीनों नइखै चूअल महरौली में ।

सिरतन—बिधि-बरम्हा के रेख पर मेख मारल तोहरा हाथ में नइखे नोहर ! तोहार अमहरा के गढ़ में नइखे न जनम भइल, नाहीं त तुहँ दु लाख के तसील पर बइठता, मजिहटर साहेब तोहरौ के खुरसी दीतें । आपन हसियत देखा !

नोहर—ए देवान जी ! इ हमरा कहला के जबाब ना भइल । हमनी के जनम महरौली में भइल बा । हम त इहँ जानी ले कि मतारी के थन में दूध पहिले आवेला, तब लइका जनम लेला । हमनी के जनम जब महरौली भइल बा, त महरौली हमनिये के जीये-खाये खातिर हवे ।

सिरतन—जीअत-खात नइखे ? महरौलिये का परताप से, बाबुए साहेब का परताप से नु ? जौना पतरी में खाये के ओही में छेद ना करे के नोहर राउत !

नोहर—बाबू साहेब के पतरी होई, त अमहरा में होई, महरौली में ना देवान साहेब ! महरौली ओही के हवे जेकर पुरुखा जंगल काटि के, बाघ-हुंड़ार मारि के एके अबाद कइलें; महरौली में सोना बरसत-आ, ओही हाथन के परताप से, जौनन में दस-दस गो ठेला पड़ल बा ।

सिरतन—तोहरा अकिल से सोचे के होइ, तब नु ? मुदा 'अन्हरा के आगे रोवँ आपन दीदा खोवँ' अहिर के बुधियै केतना ?

नोहर—लूट के बुधि नइखे, खून चूसे के बुधि नइखँ; बाकी माटी के सोना हइहे हथवा बनावेला देवानजी ! छ हजार मलगुजारी दा, तीन हजार बबुनी के वियाह में दा, दु हजार मोटर के चिट्ठा में दा, पानसै हाथी के चिट्ठा में दा, तीनसै घोड़ा के चिट्ठा में दा । साल भर बगारी करत-करत मू-आ । हेइ मालिक के सवारी आइल, हेई मनेजर साहेब के हुकुम आइल, हेई सजावल साहेब अइलें, हेई पटवारी, हेई, सवार,

हेई सिपाही-पियादा, हेई गोराइत-बराहिल । दुत् तोरी की ! कमाई हमनी के, ओ हरियरो ना होये पाई, जेही आवत-आ से ही कुपुटि के खा लेत-आ ।

सिरतन—घास जेतने कटाले-नोचाले ओतनै फुनगी फेंकैले । नोहर ! तोहरा लोगन के एतना ना देवे के पड़ित, त इतना कमइबो ना करत-आ ?

नोहर—कमा-कमा के मुवही भर हमनी के काम ह । ओ हमनी के कमाई में आगि लगावेवाला उहाँ अमहरा में केहू बैठल बा । बबुआ के बरात गइल रहल, त कौ हजार अदिमी गइल रहले, पाँच हजार त अतिश-वाजी में उड़ावल गइल । बनारस, लखनऊ आ कलकत्ता तकके दसगो नामी-नामी तायफा गइल रहलीं, ई केकरा कमाई से देवान जी ?

सिरतन—अपना भागसे नोहर राउत ! कमायेवाला कमाला, भागवाला खाला । “करम प्रधान विस्व करि राखा । जे जस करै से तस फल चाखा ।” बाबू साहेब ओह जनम में करम कइले बाड़ें, “तप चुकि राज” भइल बा, तू ओह जनम के पापी हवा, उहे भोगत बाड़ा ? केहूका हिरिस कइलासे ना किछुओ होला ।

नोहर—त हमनी जे ई घाम में खेत कोडत-जोतत मूईले, बरखा में दिन भर भीजीले; धान रोपीले, घास सोहीले, जाड़ा पाला में कठुआते खेत में सत्ती होई ले, ई करम किछुओ नइखे ?

बुभावन—हमरा सोभवा अदिमीके बुधि में त इहे आवत-आ, कि भगवान् जेकरा के जौना गाँव में जनम दिहलें, भगवान की ओर से ऊ गाँव ओकरे लिखा गइल; बाकी कागज-पत्तर के बात, से भगवान की ओर से नइखें लिखा के आइल । महरौली के कचहरी से छपरा के कचहरी ले देखले नु बानी, कैसन कागज में इमानदारी राखल जाले !

नोहर—बुभावन ! जे धरतीमाता के पाछे आपन खून-पसीना एक करेला, उहे इमनदारी के अन्न खाला, नाही त ई जिमदार बड़का जोंक हवें । वाप रे वाप ! हमनी के देही में रचिको रकत ना रहि गइल, हाड़ी-चाम एक-जगहा राखल मुसुकिल बाटे, आ ओने गुलछर्रा उड़त-आ ।

[परदा गिरि जात-आ ।]

अंक २

हाइ हो देहियाँ लगली जोंक ।

रात-दिना हम कमवा में खटली, कपरा लेहलीं ठोंक ।

डेढा सवाई सहुआ कइले, देलै करेजवा भोंक ॥

खोलि दुकनिया सेठवा लूटै, टैवो के नाही रोक ।

मिल में बइठि मजुरवा रोवै, भकसी देहले भोंक ॥हाइ हो०॥

[सेठ भाकुरचंद दुकानदार, सेठ ढोंढामल मिल-मालिक, दुब्बर साहु महाजन, तीनों अदिमी एक से एक मोट, गोड़ छितरौले आवत बाड़ें, दुब्बर साहु उढुकि के गिरि गइलें, ढोंढा आ भाकुर निहुरही में ओनहीं के ऊपर गिरि पड़लें ।]

दुब्बर साहु—वाप रे वाप ! पिसा गइनी, केहू उठावा हो ।

ढोंढामल—जिउ गइल रे दादा ! भकुरवा हमरौ के जंतले वा ।

कौनो बँचावा ।

भाकुरचंद—घ-घ-र-वा क्-कै क्-कुली ब्-बे-क-तिया म्-मु-ग्-गइ-लें क्-का !

ढोंढामल—पेट फाटत-आ रे भकुरवा ! कहां से तोरा घरे अइनीं ।

भाकुरचंद—ह्-ह्-ह-मरा क्-क्-के म्-म्-म्

दुब्बर साहु—हाइ मुअनी, हाइ, हाइ ।

[तीन गो नोकर आ के पारी पारा तीनों जने के उठा के खड़ा कइलें, फेनु मेंच पर खुरसी पर तीनों जने बइठलें ।]

भाकुरचन्द [हाँफत, हाथ से पंखा करत] द्-दु-ब्-ब्-र स्-सा-हु ।
च्-च्-चो-ट्-टि ?

दुब्बर साहु [साँस तर-उप्पर होत] जिव बांच गइल भाकुरचन्द—
जी ! पहिले असगुन भइल ।

ढोंढामल—पैदल दुइयो डेग चलै लायक ना हवे । आ दुब्बर
साहु ! नौवा कै कौनो लेसो नानु तहरा में बा । मरदवा ! तनी खैका
कम करे के चाही ।

दुब्बर साहु—रामदुहाई ढोंढा ! खोराक आधी क देहनी, दूनों
सांभ मिला के खाली डेढ़ पाव घीउ लेतानी । सहुआइन फिकिर के मारे
भुराइल जात बाड़ी ।

ढोंढामल—ऊ काहे ?

दुब्बर साहु—हमार देहियां किछुओ-बा ? कहत बाड़ीं 'तू त सूखि
के काँटा होत जात बाड़ा' ।

ढोंढामल—काँटा ! समुच्चा कलकत्ता सहर में इहै हमनियें तीन
गो त भुरा के काँट भइल बानी ।

दुब्बर साहु—हेई मरदवा, भाकुर के मुँह से त बकारो नइखै निक-
रत । आ हमरा देहियाँ पर इहै नु गिरलें पहिले ।

[नोकर गिलास में सरबत लेके अइलें ।]

ढोंढामल—हमरा अग्रवालन के जात में बरजित त बा, मुदा
सुननी हाँ, कि वच्चा मुरगी कै सुरुवा पिअला से मोटाई कम होले,
चार महिन्ना से पाँच गो रोज लेतानी, आ कुछ फँदो मालुम
होत-आ ।

दुब्बर साहु—(आंखि आ मुंह फारिके)—ढोंढामल जी ! साँचे फैंदा भइल हा ? देहिया के ओजनवा किछु, कमल ह ?

ढोंढामल—एक बेर तौलले रहनीं, त दु सेर कम भइल ।

दुब्बर साहु—आ अबकी बेर ?

ढोंढामल—दस सेर बढ़ली हाँ, मुदा देहिया में बड़ फुरती मालुम होले ।

भाकुरचंद—फ-फ-फ-र-त्-त्-ती !

दुब्बर साहु—भोजन बढ़ला घटला से किछुओ न होखे, असल चीजु फुरती हवे ।

ढोंढामल—फुरती त मालुम होत-आ, हमरा घर भर कै लोग कहत-आ ।

भाकुरचंद—ह-हम ह-ह-हू ख-खा-येव,

दुब्बर साहु—त हमरो ई दवाई करे के वा ।

[पाछे की ओर से अवाज अवाति-आ] “पूँजीसाही, नास हो”

ढोंढामल—सुनला ह दुब्बर साहु ?

भाकुरचंद—ह-ह-हम हूँ सु-सुन लीं ।

दुब्बर साहु—मजूर किसान राजवाला अइलें ।

ढोंढामल—ई जिउना छड़िहें दुब्बर साहु ! सपना में नीदि केतना बेर उचटि जाति-आ ।

दुब्बर साहु—विदादसमी में देस गइल रहनी हाँ, गाँवनों में ई बेरामी फइल गइल वा । उहाँ “जिमदारसाही नास हो” कहे लें, आ इहाँ “पूँजी-साही नास हो ।”

ढोंढामल—तहरा छपरा जिल्लाले ई ललका भंडा चहुँपि गइल वा ?

दुब्बर साहु—गाँवन तक ले ढोंढामल ! हमरा एक जना पाहुन

के थैली गिन के खरीदल जिमदारी में सैकड़न बिगहा खेत छीन लेहलें ।

ढोंढामल—सरकार पुलिस मदत ना कइले ?

दुब्बर साहु—किसान एतना एकवट गइलें, कि ओकनी के बाति माने के परल । बाकी उहाँ के बाति छाँड़ी, हई बताई, ई जे हमनी के उप्पर संकट आइल बा, एकरा बारे में का करै के चाही ? काल हमरो गद्दी के समने ललका भंडा घुमौलें, आ “सूदखोर नास हो” चिल्लात रहलें ।

ढोंढामल—हम त समुभक्त रहनी, कि हमनी के चटकल-पटकल के मजुरवै बिगड़ल बाड़ें ।

भाकुरचंद—ह्-ह्-मरा द-द-द दु. . [लतफत हो गइले, पूरा बात मुँह से न निकसल]

ढोंढामल—ई तहरा से बात न होई सेठ भाकुरचंद ! बोलावा अपना बेटा के ।

भाकुरचंद—[नोकर के]-जू ज्-जा, ब्-ब-ब-ब—

नोकर—वबुआ जी के बोला ले आईं सेठ जी !

भाकुरचंद—ह्-ह्-ह्-हां ।

[नोकर निकर गइल । बापे लेखा मोट-भोंट जवान लादूचंद के ले आइल]

लादूचंद—जै राम जी की चाचा ढोंढामल ! जै रामजी की

[खुरसीपर बइठि गइलन]

ढोंढामल—अब नोकरन के जाये देवै के चाही ।

लादूचंद—जा सन ! [सब नोकर चल गइलन]

दुब्बर साहु—खदुका, गाहक, मजूर सब के चोट हमनी के उप्पर बा लादूचंदजी ।

लादूचंद—से त देखतानी, साहुजी !

दुब्बर साहु—कलकत्ता सहर में छोट-बड़ जेतना सूद के रोजगार हरैवाला बाड़ें, सब के उप्पर संकट आइल बा । खदुका एक ओर से हमनी के डाकू कहत बाड़ें ।

लादूचंद—हमनियों घर के लछिमी लगा के दुकान कइले बानी । एकम-टीकस दा, मकान के भाड़ा दा, रोसनी-पानी के टीकस दा । टीकस गाडा के मारे तबाह-तबाह बानी—

एगो बुढ़िया भिखारिन [आ के]—सेठजी ! एगो ढेबुआ भिख-रंगिनियों के मिले, दूध-पूत बनल रहै ।

लादूचंद—भाग इहाँ से, मुखुत के पैसा खाये के सिखले बाड़ीं ।

बुढ़िया—केहू नइखे सेठजी ! भरला पर ना, जरला पर माँग-गानी । फुलल रह सेठजी ! एगो ढेबुआ ।

ढोंढामल—ई त मालुम होत-आ, कि किछु दिन में कलकत्ता भिख-रंगवनें के हो जाई । सबेरे से साँभ ले, बड़चो . जब देखा तब भिख रंगा घेरले रहैलै ।

दुब्बर साहु—पुलुस का ध के ले जाये के चाही, एकनी के मारे भल-मानुस के कतहूँ बइठलो मुसुकिल हो गइल बा ।

बुढ़िया—सेठजी ! पुलुसियो ले जाइत हमनी के, त खइला से नेहिचिन्त त रहतीं, एगो पैसा सेठजी ! बाल-बच्चा जुड़ाइल रहें ।

लादूचंद—(एगो अघेला फोंकि के) जो भाग, फेनु एनेकी ओर देखलीं, त निम्नन ना होई ।

ढोंढामल—दुब्बर साहु जे बात कहलें, उहै बात हमनी मिलवाला जोगनौके बा । चट, पट, कपड़ा, कागज जेतना मिल, कारखाना बा ; सब जगह मजूर एकवट के सभा करत बाड़ें ; जब से सुनले हाँ, कि रूस मुलुक में मजूरन-किसान के राज बाटै, तब से एकनी के मन अउर बढ़ि गइल बा ।

दुब्बर साहु—ठीक कहलीं हाँ, ई ललका भंडौ ओहीं से उप्पर भइल हा । हमनी के त ई सब डाकू बूभैलें ।

ढोंढामल—रोजगार में टोटा पर टोटा पड़ल जात-आ । चौथा साल चार लाख के मुनाफा भइल रहल, परियार पाँच हजार मजूरी बढ़ावे के पड़ल, परसाल दु हजार औरू बढ़ावै के पड़ल । एहिसाल फेनु हड़ताल के तयारी करत बाड़ै, बाहर के न जानी कहाँ के लुहेंड़ा जुटि के भड़कावत बाड़ै, मजूर-सभा, ऊनियन-फूनियन का का बनावत बाड़ै ।

दुब्बर साहु—अपने लोगन के त सेठ ढोंढामल ! दवर बा, पाँच हजार मजूरी बढ़ाइब, त चीजपर सात हजार दाम राखि देब । हमनी के त सूद बेसी करी, त कनून से पकड़ल जाई, बहीखाता में तनिको फेर-बदल होय, तो, जरिबाना-जेहलखाना ।

लादूचंद—महाजनों के रहता बा साहुजी, अपने लोग त ६० रुपया देके बही भै हींगलोट पर सौ रुपया चढ़ाई ले । कहै के रही छ रुपया सैकड़ा, आ होई चौबीस रुपया सैकड़ा । अपने के छोट-भैया त रुपया पर पैसा रोज के सूद असूले लें । हमनिये दुकनदारन के मुसुकि बान्हि के पटक दिआइल बा । अब हई जे कनून बनल हा, जौना में दुकान के नोकरन के अतवार के छुट्टी औ घंटासिरे काम के बात लिखाइल बा, ओसे त औरू हमनीके हाथ बन्हा गइल ।

ढोंढामल—लादूचंद ! तू त अपने बापो से बढ़ के काइयाँ निकरला । आजकाल लड़ाई के दिन में त दुकनदारन के नु पाँचो घीउ में बा । एक रुपया के चीज के चारि रुपया लेत बाड़न्, सरकार दाम ठीक करै के अईन-कनून बनावते रहति-आ, बाकी ऊ डार-डार जाति-आ, त तोहन लोगन पात-पात ।

लादूचंद—इहै त कमाये के दिन ह, सेठजी ! तुहूँ कपड़ा के मिल-वाला लोग, निहाल हो गइला । डेढ़ सौ रुपया के रुई के गाँठ रहे, तब एक

रुपया सात आना धोती-जोड़ा, अढ़ाईसो रुपया गाँठ भइला पर दु रुपया सात आना, फेनु भाव गिरि के जब गाँठि १६० रुपया रहि गइल, त तीनों रुपया से बेसी ।

दुब्बर साहु—हमनी के एक-दूसरा के हिरिस कइला से काम ना चली सेठ लादूचंद जी ! ई देखत नु बानी कि कुल्ह भुक्खड़ आ कुछु पढुआँ मिलि के चाहत बाड़ें, हमनी के नाँव ना रहे देव के, आँ हिनुतानी में ऊ रूसै लेखां राज कायम करे चाहत बाड़ें ।

ढोंढामल—ई बात सोच के ह, बेटा लादूचंद !

(अवाज आवति आ) “मजूर-राज, कायम हो”, “किसान राज, कायम हो”, “पूँजीसाही, नास हो ।” “लाल भंडा, अमर हो ।”

[नोहर, रमजान केतना लोग के साथे लाल भंडा लेले चहुँपलें, आँ मंच के नीचे खड़ा भइलें, सेठ लोग सहमि के सुनत-आ ।]

रमजान—(बाख्यान देव के सुर में) भाई लोनी ! काम में दिन-रात खटत-खटत हमनी के जिउ जात-आ, आँ हमनी के बाल-वच्चा अन्न बिना पटपटात बाड़ें । हेने हेइ देखीं, कोठापर कोठा उठल चलि जात-आ, बिजुली के पंखा रात-दिन चलत-आ । ई कुलि केकरा कमाई से ? हमनी मजूरन के कमाई से । चीनी के मिलन में चार बरिस में लागल रुपया कुल्ह मुनाफा से सधि गइल, इ केकरा कमाई से ? हमनी का कमाई से । अन्न, कपड़ा, लोहा, लक्कड़ दुनिया भर के कुलि चीजु जाँगर चलौला—चोटी के पसीना एड़ीले बहौला से पैदा होला । जे आपन देहि ना सम्हारि सकैला, से का चीजु आ धन उपराजी ? कामचोर-चामचोर हमनी के कुलि कमाई लूटि के मउजि करत बाड़ें । केहू मिल के मालिक बनि के लूटत-आ, केहू दुकान छानि के लूटत-आ, केहू हमनिये के जाँगर के कमाई रुपया के रूप में चोरा के डेढ़ा-सवाई क रहल बा । “बोलीं कमकरन के (सब लोग) जै ।” “बोलीं कामचोरन के [सब लोग] छै ।”

नोहर—भाई लोनी ! अहिर सोभे बतियावै जानैला । जेतना लोग दूसरा के कमाई पर, दूसरा के पसीना पर, दूसरा के खून पर जीयैला, ऊ सब जोंक हवै । जबले जोंक दुनिया में रहिहें, जब ले जोंकन के सरदारी रही, तबले मजूरन, किसानन, जांगरवालन के हाँड़ी पर ढकनी न बइठी । “बोलीं जोंकन के, [सब लोग] छै ।” “बोलीं मजूरन के [सब लोग] जै ।”

[लाल भंडा लेले लोग चलि जात-आ ।]

ढोंढामल—देखा हो दुब्बर साहु ! जे किछू बचल रहल ह, ऊहौ पुरनाहुत हो गइल । हमनी के इ जोंक बनावत बाड़ेंसन् !

दुब्बर साहु—ई मतारी बहिन के गारी से बढ़िके हवे, सेठ भाकुरचंद !

भाकुरचंद—ऐ-इ-इ-इ-स्-स्-सन ग्-ग्-ग्-गारी ज्-ज्-ज्-जिनि-ग्-ग्-गियो, भ्-भ्-भर न्-न्-ना स्-स्-सुन-लीं ।

[परदा गिरत आ]

अंक ३

[गीत]

हाइ देवा बनल गरे फाँसी ।

स्वारथ से जोड़ि जोड़ि पोथिया बनौलस,

बम्हना भइल सतनासी ।

हमनी के खुनवा सुखौला के किछुना,

जोंकिया सरग के बासी ॥

जेतनी अनैया औ पधवा जगत् में,

भगियै लगौलै भाँसी ॥

भूठ तोर सधुआ धरमवा करमवा,

भूठै बम्हनवा के कासी ॥ हेई० ॥

[बड़ बड़ जटा ओ देह में भभूत लगौले साधु गोपालगिरि धूनी के पास बैठल बाड़ें, ओनकरा हाथ में गंजही चिलम में कंकड़ भरल हवै]

गोपालगिरि—लेना हो शंकर, गांजा है न कंकर । शंकर आजा, कैलसपती के राजा [चिलम में दम लगावत-आ]

[दूसर जटाधारी साधु रामदास माथे में बैरागी तिलक लगौले आके]

रामदास—सीत्-ता-रा-न-न-म् ।

गोपालगिरि—आवा सीताराम, आवा दम लगावा ।

रामदास—दम हवै ! ओ हो ! महतिमा आजकाल दमो सपना हो गइल बा । कांगरेजवालन कै नास हो ! “रहै न कोउ कुल रोवनि हरा ।” दु महिन्ना दम लगौला भइल ।

गोपालगिरि—सूखा भुर्रा हा सीताराम ! नैपाल से आवे में एक चिलम गांजा निकल गइल, तौना खातिर, मत पूछा, एक महिन्ना के जेहल दे देहलस् ।

रामदास—आखिर ससुरी कांगरेज गइल, बाकी संकर के बूटी साधुन के मुँह से छोड़ा के [चिलम ले के दम लगावत-आ, फेनु चिलम देके उठे चाहत-आ]

गोपालगिरि—कवन जल्दी पड़ल बा, सन्त !

रामदास—सौकेरे कहीं बसती-नगर धरै के चाही, इहाँ जंगल अगोरला से काम नानु चली ?

गोपालगिरि—संत बइठि जायें, त जंगल में भंगल होला । महतिमा ! अपने के नाँव ?

रामदास—हमार एक गो छोटा सा नाँव रामदास ह, आ, अपने के ?

गोपालगिरि—एहि चोला के नाँव गोपालगिरि हा, गुरु महाराज की किरपा से, रामदासजी ! जंगल से डेरा मत ।

रामदास—पेट में मूस कूदत-आ गोपालगिरिजी ; आ दुपहर हो गइल ।

गोपालगिरि—बइठा महतिमा ! गुरु महाराज की दया से इहें बैठले-बैठल रिद्धि-सिद्धि सब चहुँप जाई ।

रामदास—त मालूम, होत-आ, गोपालगिरिजी ! अपने बसती के चेतौलने बानी ?

गोपालगिरि—साधु जहाँ बइठि जायें, वहाँ दुनिया ससुरी चेंती न त का करी ?

[गोड़ के आहट सुनाइल, रामदास देखलें ए गो मेहरारू थरिया में किछु लेइले आवति-आ]

रामदास—[देखि के] मालुम होता, ई भगतिन् किछु ली आवति-आ, पेट में आग लागल बा महातमा ! सबेरे आसन छोड़ला पर एक लोटिया [तीन सेर भरै लायक लोटा देखा के] दूध पियली ।

गोपालगिरि—गुरु महाराज भेज देहलें रामदासजी ! अब डंड-कमंडल राखा, आज इहई आसन लगावा ।

[रामदास कमरा और कमंडल राखि के मिरिगछाला बिछा के बइठि गइलें । मेहरारू आ के थरिया गोपालगिरि के समने रख के दूनों साधुन के गोड़ लगल, औ “खुस रहा भगतिन” असिरवाद पा के एक ओर बइठि गइल । गोपालगिरि थरिया खोलि के हलुआ-पूड़ी रामदास के सामने करतें बोललन्]

गोपालगिरि—ला महात्मा ! अब देर मत करा, माई परेम से बना के ले आइल बिया । गुरु महाराज के भोग लगावा !

रामदास—आवा महात्मा ! दूनों मूरती रामजी की हिच्छा से ।

भगतिन—तब ले पावल जा, हम घर से औरू ले आवतानी ।

गोपालगिरि—नाहीं माई ! तकलीफ ना करै के, सन्त एतनै से गुजारा क लीहें, गुरु महाराज की किरपा से ।

भगतिन—ना महाराजजी ! घर में बहुत राखल बा [भगतिन जल्दी से निकरि गइलीं]

[रामदास भगतिन के मुँह की ओर खुब निहारत रहल]

गोपालगिरि—कहा महात्मा ! नारद-मोह त ना हो गइल ?

रामदास—मुनि लोग के जहाँ ऊ हाल, तहाँ हमा-सुमा के कवन बात ? बाकी भगतिन बाउर नइखीं ।

गोपालगिरि—अबहिन तीस बरिस के छोकरी हवे, बाउर कहत बाड़ा रामजी !

रामदास—बाउर नइखी कहत । कवन जाति हवे ?

गोपालगिरि—“जात-पाँत पूछे नहिं कोई ।” औ फेनु “राँड़ बाभनी सूखा पीपर । इनमें हक्क फकीरों का है ।” समने थरिया राखि के देखत का बाड़ा ?

रामदास—दूनो मूरती के साथे भोग लागी ।

गोपालगिरि—ई न कहा, बभनिया मन हर ले गइल बिया ।

रामदास—मुँह से जौने ना तौने बचन ना निकाले के चाहीं, कौनो भगत सुनि लिहले तब ?

गोपालगिरि—साधु लोग देखि सुनि के धुनी रमावै ला सन्त ! गुरु महाराज की किरपा से । हमनी के रोज-रोज के इहै काम हवे ।

रामदास—“दुनिया ठगीं मक्कर से । रोटी खाई घिउ-सक्कर से ।”

गोपालगिरि—और ई बसती त अब्बै नु चेतै लागल हा ।

रामदास—त कुछ सिद्धाई देखौला हा ?

गोपालगिरि—दु गो मेहरारुन के साल-साल भर के लागल भूत छोड़ौनी हाँ । तीन गो मेहरारुन के कोख खोलै के जंतर देहनी हाँ ।

[भगतिन थरिया लेहले चहुँपि गइलीं]

गोपालगिरि—बहुत तकलीफ भइल माईराम !

भगतिन—नाहीं बाबा ! एहि देहीं से सन्त-महात्मा के जेतना सेवा हो जाय, उहै नु ठीक हवे ।

रामदास—[अपना संगी की ओर मुँह कके मुस्कुरातै] त आवा महात्मा ! पानी हमरा लोटो में बा [दूनों जने भोजन करै लगलें ।]

भगतिन—आज एकादसी के पारन रहल ह बाबा ! अपने दु जने सन्त-महात्मा के रूखा-सूखा हाजिर क के हिच्छा पूरा भइल ।

गोपालगिरि—जिनगी में जेतना हो सके ओतना पुत्र कमाये के ।

भगतिन—हाँ, बाबा ! एहि देह के कवन ठेकाना ? आ हम त मनाई ले भगवान् से कि अपना सरन में ले चलस् ।

गोपालगिरि—अबही माईराम ! तोहार चौथा-पन ना आइल ह ।

भगतिन—ई दुनिया से ऊ दुनिया निम्नन ह बाबा ! उहाँ भगवान् के भगती-पूजा निम्नन से होई ।

गोपालगिरि—इहौ दुनिया भगवाने के बनावल हवे माईराम !

भगतिन—हवे, बाकी इहाँ माया-मोह बेसी हवे बाबा ! जिउमें माया बेसी लपटि जाले । अपने सब साधु-महतिमा के असिरवाद होखो कि भगवान् के चरन मे जलदी सरन मिलो ।

गोपालगिरि—ऐसन धरम के काम में साधु-संत के असिरवाद सदा रहैला माई !

[भोजन हो गइल, गोड़ लागि के भगतिन थरिया लेके चल बेहलीं]

रामदास—ई त कोरै भगतिन लौकति-आ रामजीकी हिच्छा से ।

गोपालगिरि—सब्वे अंगुरी बरोबर नानु होय । आ बीस गो बंसी फेंकल बा, कुल्ह में मछरी नानु फँसै ?

[एही बखत, उज्जर पाग, मिर्जई, एड़ी ले धोती पहिर ले कपार में तिर-पुंड लगौले एक जने पंडित आ ओनकरा साथ कान पर टोपी के नीचे कलम खोंसलै मंसीजी अइलें । दूनों जने दूनो साधुन के हाथ जोड़ि के डंडवत कइलें]

गोपालगिरि—आई देवता । आई देवानजी ! ओह दिनके बाद त फेनु दरसनै ना भइल ।

मंसीजी—नयका सालके बहीखाताके काम ह बाबा ! का करी “गृह कारज नाना जंजाला ।”

गोपालगिरि—हाँ ऐसे होला ! अच्छा पंडितजी ! अपनेहू के दरसन ना भइल रहल ह ?

मंसीजी—इहाँ के हमरा सरकार—बाबू साहेब—के गुरु बड़का पंडित हवीं । कासीजी से बारह बरिस पढ़िके आइल बानी ।

गोपालगिरि—कहाँ चलली हा, पंडितजी !

पंडित—कासीजी से एगो बहुत भारी महात्मा आइल बाड़ें, भारी विद्वान् स्वामी सुखानंद जी महाराज । हमरा सरकार के बहुत आग्रह बा, कि स्वामी जी कुछ दिन अमहरा में वास करस् आ अपना मुखारबिंद से उपदेस सुनावस, बाकी स्वामीजी एकन्ता छाड़ि दुसरा जगह ना रह सकीले । अपने के तलीफ ना होइ, त एही कुटिया में स्वामीजी के आसन रहो, सरकार अपने के एगो औरो पलानी के घर बनवा दीहें ।

मंसीजी—[दु तोला के पुड़िया हाथ में थमावत]—हमरा साहुजी भेजले हाँ, बड़ा मुसकिल से बाबा !

गोपालगिरि—[उतरल मुँह पर हँसी दउरि गइल]—जगत-गुरु ब्राह्मण के बात कैसे टारल जा सकलै पंडितजी !

पंडित—आ ब्राह्मण गुरु संन्यासी ।

गोपालगिरि—संन्यासी गुरु अविनासी । ले आवा पंडितजी ! ई स्वामियैजी के नु आसरम हवे ।

[लोग चलि गइल]

रामदास—विधिन त भइल रामजी की हिच्छा से, तोहार बंसी त कुल्हि खाली जइहै ।

गोपालगिरि—[पुड़िया के खोलि के] हई देखा, केतना महिन्ना बाद संकर के बूटी, औ दु तोला से कम ना ।

रामदास—(खुस होके) गाँजा ! बाकी संडसिया हमनी के भजन-भाव में विधिन त ना नु करी ।

गोपालगिरि—पढ़ला-लिखला से बेसी फरक ना होला रामदास ! गुरुमहाराज की दया से सुखानंदौ ठीकै उतरी, नाहीं त बच्चू के भगावत केतना देर लगी ।

[आगे-आगे गेरुआ बहतर पहिरले एगो मजबूत अंधेड संन्यासी पाछे-पाछे बाबू रंगसिंह जिमीदार, लोटन साहु महाजन, पंडित चाणूर-दत्त, मंसी फुलेनालाल औ लंगटू नोकर बिसतरा-उसतरा लेहले अइलें । गोपालगिरि आ रामदास उठ के कहलें]

“स्वामीजी नमो नारायण !”

स्वामी—[मुंह आ आँख से भरपूर खुसी देखावत हाथ जोरि के]—सन्तलोग इहाँ विराज रहल बा । अहोभाग्य । शिवोहं, शिवोहं । हमरा रहला से संतलोग के कौनो कष्ट त ना होई ।

रंगसिंह—लंगटू ! देखा महातमा लोग के कौनो कष्ट ना होखे के चाही । एक गाड़ी लक्कड़ ले आ के गिरा दा । कौनो तरह के कष्ट ना होवे के चाही, सुन ला ।

लंगटू—हाँ सरकार । [लंगटू धूनी से फरके बिछौना राख के कुटिया में जाये लगले, बीचें में]

स्वामी—भीतर मत ले जा नारायण ! शिवोहं, अबहिन एहीं बहरे आसन बिछा दा ।

[लंगटू स्वामी जी के आसन बिछा के, एगो कमरा फरका बिछा देहलें]

स्वामी—(बइठिके) बइठीं नारायण, शिवोहं ।

रंगसिंह—(कमरा पर बइठिके)—बइठीं पंडित जी, बइठीं लोटन साहु ! कमरा पर ।

लोटन साहु—सरकार के बरोबर !

[लंगटू दूसरा कमरा ले आ के बिछौलस्, पंडितजी आ साहुजी ओपर बइठलें, मंसीजी भुइयें एक ओर चुक्का-मुक्का भइलें ।]

रंगसिंह—सरकार के आराम करैके होई ?

स्वामी—नाहीं, नारायण ! शिवोहं रात के एक घंटा विश्राम हमरा खातिर बहुत हा । सतसंग-बात होखो ।

रंगसिंह—सरकार स्वामी जी महाराज ! संसार दुख चिन्ता के घर हा ।

स्वामी—जुग के प्रताप हा नारायण शिवोहं, कलिजुग पाँच हजार बीति गइल । मरजादा टूट रहल बा । “वरण धरम नहि आश्रमचारी”, सब लोग कुपंथ धै लेहले बा ।

रंगसिंह—स्वामीजी के मुखारविंद से ठीक निकर रहल बा ।

स्वामी—दुनिया में पाप छा रहल बा, नारायण शिवोहं, एहीसे सालै साल महामारी, अकाल-दुरभिच्छ पड़त-आ ।

लोटन साहु—करम-धरम सब उठल चल जात-आ । गुरु महाराज ! भगवान् के डर उठ गइल बा ।

स्वामी—हाँ, नारायण शिवोह, चार दिन की जिनगी ई मायारूपी संसार में लोग भूल रहल बा । फेनु अन्तकाल में खाली पछताला । बाकी करमभोग टर ना सकैला ।

रंगसिंह—महाराज स्वामी जी ! जीव काहे ना समुभेला कि ई दुनिया रैन-बसेरा हा ?

स्वामी—नारायण शिवोहं, माया के फेर इहै कहाला । माया के फेर में पड़ि के जीव अपना असली रूप के भुला देले बा । शिवोहं, शिवोहं, शिवोहं, ब्रह्म में ई जगत तीनों काल में खाली भरम हा । [ए

ही बखत नोहर कलिकतिया मजूर के भेस में आ के स्वामी के हाथ जोड़ि के ठाढ़ भइलें ।]

स्वामी—नारायण शिवोहं भरम, बैठा । (नोहर एक ओर भुइँ पर बह्ठि गइलें ।)

लोटनसाहु—भरम !

स्वामी—सपने के माया, अन्हार में देखला पर रसरी में साँप के भरम । मेरा तेरा—हमार तोहार—सब भरम साहुजी ! पांक में गिरल जीव के उप्पर-उठावल, कहल जा सकैला बाकी इहौ भरम, ब्रह्म छाड़ि जब दूसर चीज तीनों काल में नइखै. त केके के उठाई, कहवाँ से उठाई ।

नोहर—महराज जी ! साँचै ई दुनिया समुच्चा भरम हवे ?

[रंगसिंह, लोटन साहु आ पंडितजी कान खड़ा क के मजूर की ओर गुरेर के देखै लगलें ।]

स्वामी—हाँ, नारायण शिवोहं । तू, आ जेतना लोग हवै, केहू तीनों काल में नइखे, एकै ब्रह्म दूजो नास्ति ।

नोहर—केहू दुनिया में सुख करत-आ, निम्मन खात-आ, निम्मन पहिरत-आ दस हजार आदिमी के परान, इज्जत ओकरा हाथ में हा । केहू हमरा लेखा रात-दिन काम क के मूवत-आ, एक साँभ के अन्नौ ना जुरत-आ, ई काहे ?

स्वामी—ब्रह्मरूप में ई कौनो भेद ना, ना केहू निम्मन खात-आ पहिरत-आ, ना केहू भूखा मरत-आ ।

नोहर—भूख पेट के आरालेखा चीरै ले, घर में खरची ना रहला पर लइकन के छटपटात देखि के करेजा फाटै लगैला । हमनी के ई भरमना साच बुभाला ।

स्वामी—सपना साँच बुभाला, दिसा-भरमवाला का आपन दिसा साँच बुभाले । बाकी एको ब्रह्म दुतीयो नास्ति, ब्रह्म में कहीं किछुवो विकार नइखे, किछुओ दुख-संताप नइखै, सब सदा अनंद हा, नारायण शिवोहं ।

नोहर—सपना होइत त केतना खुसी के बात रहल ह, बाकी ई भूख, ई लइकन के छटपटाइल भूठ ना, सोरहो आना साँच बुभाला सामी जी महाराज !

पंडित—स्वामीजी महाराज ! ई वेदांत ना समुझि सकैलै, एनकरा के हम समुभावतानी । का नांव हवै तोहर भैया !

नोहर—नोहर नाँव पंडित जी !

पंडित—दुनिया में ई दुख-सुख सब पुरुबिला करम से हा । हमार सरकार एतना साधु-महतिमा, देवी-देवता के सेवा-टहल दान-पुन्न करत बाड़ें, एकर फल आनके आगे मिली । हमरा अमहरा के लखपती महाजन लोटन साहु जे नौका ठकुरबाड़ी बनवलै हाँ, सदाबरत लगौले बाड़ें, एकर फल बांवा ना जाई । एहि जिनगी के पुन्न के फल भोग-सुख अगिला जनम में मिली नोहर ! पछिले जनम के कइल पुन्न के फल एहि बखत मिलि रहल बा ।

नोहर—पुन्न के फल ! बाकी पंडित जी ! लौटन साहु लइकैयाँ अपना चाचा क साथे कपारे पर दौरी ध के तेल बेंचत रहलन । ओहि बखत पछिला जनम के पुन्न सहाइ ना भइल । दौरी-दुकान राखि के एक के डेढा करै लगलै, गीरबन के कमाइल धन अपना घरे सहेटे लगलै । फेनु सवाई सूद पर रुपया लगावे लगलै, तब जमा होये लागल । जेतना धन औ रुपया लौटू साहु के पाले वा, ऊ सब हमनी लेखाँ कमेरन के पेट काटि के जमा भइल बा ।

पंडित—पेट काटि के कहत बाडा !

नोहर—हम बुर्बक अदिमी हवी पंडितजी ! एसे बुर्बकै लेखा हमार बातो होई, म्दा एके त देखल जात-आ कि अमहरा के बाबू साहेब होय, चाहे लोटन साहु होय, केहु का घरे पहिला के पुन्न-परताप से भूँड नइखै फूटल । हजार घर के भूखन मारि के एहि लोग के घरे धन जमा भइल

हा । ऐसे हमरा त बुझात-आ कि पछिला जनम के पुत्र-उत्र कहल, एही पपवा के छपावै खातिर हा ।

[रंगसिंह औ लोटन साहु के त्योरी बदल गइल]

पंडित—त साधु-बराभन, धरम-करम तोहरा खातिर किछुओ ना हा ?

नोहर—पहिले हमहूँ बूझत रहलीं, कि किछु बा; बाकी अब लौकत-आ, कि खाली धोखा ह । तीन अदिमी मिलि के तीस आदिमी के कमाई खा जात-आ, आ साथै बुरबकौ बनावत-आ । गरिबवा मुँह ना खोलै, एही खातिर कहल जाला कि बाबू साहेब भै साहुजी अपना करम के कमाई खात बाड़ें । आँखि के समने त लूट-पाट छाड़ि ई लोग कौनो कमाई नइखे करत ।

[रंगसिंह, लौटू साहु आ पंडित तीनों लाल-पीयर आँख करै लगलें, स्वामी ममिला बिगड़त देखि के बोललन्]

स्वामी—नाहीं नारायण शिवोहं, तू चाम के आँखि से देखत बाड़ा, ग्यान की आँख से देखला से साच-साच मालुम होला । नारायण शिवोहं, ब्रम्ह छाडि के जब जीव माया में पड़ैला, तबै दुनिया के भंभट भगड़ा होला ।

नोहर—स्वामी जी ! अपना परमगियानी चेला लोग के कह ना दीं, कि माया के हमनी गरीबन के दे देस्, जोकि लेखा हमनी के काम-करनिहारन के खून ना चूसस् । ई बात करीं त हम मानब, नाहीं त हम इहै समुझब कि धरम-वेदानत-देवता सब हमनी की आँखि में धूरि भोके के हवें, आ कुलि चोरै-चोर मौसियाउत भाई हवें ।

रंगसिंह—धत् तोरा बदमास की [उठि के नोहर के गरदन पकड़ चहलें, अहिर के हाथ लगतें डिमला के मुँह के बले गिरलें । पंडित जी छोड़ावें चहलें, ओनहूँ के पगड़ी कहाँ गइल औ सटपिटा के एक ओर बहाना बना के गिरि पड़लें । साहु आ मंसी जी बाबू साहेब के नगीचा पड़ि रहलें । असल लड़ाई लंगटू, गोपालगिरि आ रामदास से भइल । सब के बेकाबू

क के जब गोपालगिरि की छाती पर नोहर बइठि गइल, त स्वामी जिओ उंडा चला देहलें । नोहर ठठा के हंसल]

नोहर—देखलीं नु सामीजी महाराज ! ई दुनिया माया हा कि साँच । हई जिमदरवा, सहुवा, कुली धनिकवा हमनी कमेरन के देहि में लागल जोंक हवें, औ सधुअवा, बम्हनवा, मोलवियवा ई कुली जोंकन के दलाल । जा तोहरा के छाड़ देतानी, काहे से तोहरै कारन हमरा के हेतना बोले के मोका मिलल ।

[परदा गिरि गइल ।]

अंक ४

[हवाई-हमला रच्छा-हिपाही के पोसाक में नोहर गोड़ से लँगड़ात चलत बाड़ें, ओनकरा साथे एगो अंगरेज औ दुगो हिनुतानी सिपाही बाड़ें ! नोहर के खुरसी में बँठा के तीनो अविमी बइठि गइलें । अंगरेज सिपाही अंगरेजी में बोलत-आ, आ ओके अपना बोली में हिनुतानी सिपाही खेलावन-राम करत बाटें ।]

अंगरेज सिपाही—(कुछ कह के) बहुत तरीफ, बहुत तरीफ ।

खेलावन—नोहर भाई ! हमार साथी इ अंगरेज सिपाही तोहरा हिम्मत के बहुत तरीफ करत बाड़ें । ओनकरा अफसोस बा कि ऊ हमनी के बोली ना बोल सकलें ।

नोहर—खेलावन भाई ! तरीफ के कवन बात हा, तोहरा लोगन जपनिया रछछन के मारि भगावै खातिर चौबीसो घंटा आगि में गोड़ धइले बाड़ा, हमनी के घर के हिफाकत नू करै के चाही ।

अंगरेज—(खेलावन के किछु पुछलें, खेलावन बतियोलें, फेनु ओकरा मुंह से निकसल) बहादुर चाबस् ।

खेलावन—जिउ जोखिम में डारि के चारों ओर धधाके जरत बंगला के भित्तर घुस के लइका के निकारि ले आइब, त बहादुरी के काम बड़ले बा; बाकी एहू से बड़का काम ई वा, कि तीन दिन पहिले तोहरा लोगन के हड़ताल कइला खातिर मलिकवा मिलटरी बुलौले, औ तोहरा केतना साथिन के लाठी से कपार फोरवौले, केतना के जेहल पठौले ।

नोहर—ऊ त मनेजर के लइका रहै खेलावन भाई ! जे खुदे मने-जरो रहित, त ओहू खातिर हम आगि में कुदि जइती । हमरा बड़ संतोख बा, कि लइका निदाग बाँचि गइल ।

खेलावन—[अंगरेज सिपाही के किछु कहलें, ऊ हँसल फेनु] नोहर भाई ! सांचे ई अचरज के बात ह । कैसे लइकवा के तनिको रेपो ना लागल ।

नोहर—जइसही जपनिया रछछवन के उडनखटोला के मंडरात हम देखनी, ओइसही पनिया के चहबचवा में एक डुबकी लगौलीं, फेनु देखलीं अततइया बमगोला गिरावत-आ; घरन में आग लागि रहल बा, हम एगो चदरा भिजा के करिहाँव में बन्हली, औ चललीं घरन के देखै ।

खेलावन—बम गिरतें में ?

नोहर—खेलावन भाई ! हम एही के परवाह करीले, कि जेतना दिन जीये अदिमी लेखाँ जीये, मुअला से भय खाइल हमरा देखै में बड़ बुरबकई हा ।

(खेलावन अंगरेज सिपाही के कान में कहलें)

अंगरेज सिपाही—(खुश होके उछल के नोहर के हाथ अपना हाथ में ले के) अदिमी, अदिमी, बहादुर, बहादुर (बइठि के खेलावन से किछु कहले)

खेलावन—नोहर भाई ! ई हमार अंगरेज बिरादर पूछत-आ, कि हम त सुनले रहली, कि एहि चटकल में कुलि मजूर जपनिया के पच्छ के हवें ।

नोहर—जरमनवा जपनिया रछछवा, मिलें त कच्चै खा जाई ।

आ ओहि सब के नाँव मति ला खेलावन भाई ! हमनी मरि जाइब तबै जपनिया राछछ हमरा बाप-दादन के भुई में गोड़ राखै पाई ।

खेलावन—(अंगरेज से बात कइलन फेनु) ई पूछत बाड़न कि लड़ाई के जितला पर कैसन दुनिया बनावै चाहत बाड़ा ?

नोहर—जौना मे जोंक ना रहे, खुनचुसवा ना रहें; जिमदार, मिल-मालिक, सेठ-सहुकार ना रहे । जौना में सब केहू के देहि से काम करै के पड़े; सब केहू के खाये कपड़ा-रहे के पूरा इतिजाम होखे । समुच्चा देस औ दुनिया के एगो खान्दान बनि जाय । हइ करिया-गोर बड़की बड़की तनखाहवाली जोक सपना हो जाँय ।

खेलावन—(बात क के) पूछत बाड़े, कि करिया-गोर जोंक के ?

नोहर—बड़का लाट बाइस हजार रुपया महिन्ना पावैलें, घर-दुआर नोकर-चाकर आ दुसरो खरच लगावल जा, त ऊ एक लाख के महिन्ना परी । हमनी इहाँ के गाँवन में आना रोज, दु रुपया महिन्ना मजूरी पावे-वाला करोड़न लोग बा । ई इगारह हजार गुना तनखाह, लूट ना त का हा ? ई गरीब के खून चूसल ना त का ह ?

खेलावन—(अंगरेज सिपाही मुँह लाल क के किछु कहले) कहत बाड़े कि हमरा इहाँ सबसे गरीब के मजूरी २०० पौड (२६०० रुपया) साल हवे, और बिल्लाइट के महामंत्री चर्चिल के ६००० पौड (७८००० रुपया साल) भै ६ हजार रुपया महिन्ना मिलेला । सबसे गरीब आ सबसे बड़का नोकर की तनखाह में ३० गुना के फरक हवे । हमनी एतनो फरक बरदास करै के तैयार नइखी, पाँच गुना छ गुना के फरक बहुत हा । इगारह हजार गुना तनखाह लिहल त ई सोभै लूटि हा ।

नोहर—विलायत में तीस गुना और हिनुतान में इगारह हजार गुना तनखाह सुनियो के देहि में आगि लागि जाले खेलावन भाई ! बिल्ला-इत के बड़का मंतिरी छ हजार महिन्ना पावें, औ ओनकर एगो ममूली

नोकर बड़का लाट २२ हजार रुपया, छोटका लाट दस हजार रुपया महिन्ना पावें । भाई ! जब ले एहि जोंकन के बिदा न कइल जाई, तबले न ई लड़ाई बन्न होई, न मजूरन-किसान के पेट के अन्न आ तन के कपड़ा जुरी ।

(खेलावन अंगरेज सिपाही से बतियौलें, फेनु उ कहले ।)

अंगरेज सिपाही—जोंक नास हो ।

सब—(एक साथे) जोंक नास हों, जोंक नास हों, जोंक नास हों ।

[सब मिलि के गावत-आ]

उठु उठु रे तें भुख-बन्हूआ

उठु रे धरती के अभगवा

बा न्याव बजर घहरावत,

जनमत बढ़िया संसरवा ।

पुरुबिज फेनु नाही बान्ही

उठरे अब नहिं तें बन्हूआ

नइ नेंव उठत बा जगवा,

ना रहले सब किछ होइबे ।

आ जुटहु संघतिया समुहें,

ई आखिरि बेर लड़इया ॥

[परदा गिरि जात-आ]

